मार्च-२०१९ ◆ वर्ष ७ ◆ अंक १० ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

मार्च-२०१९

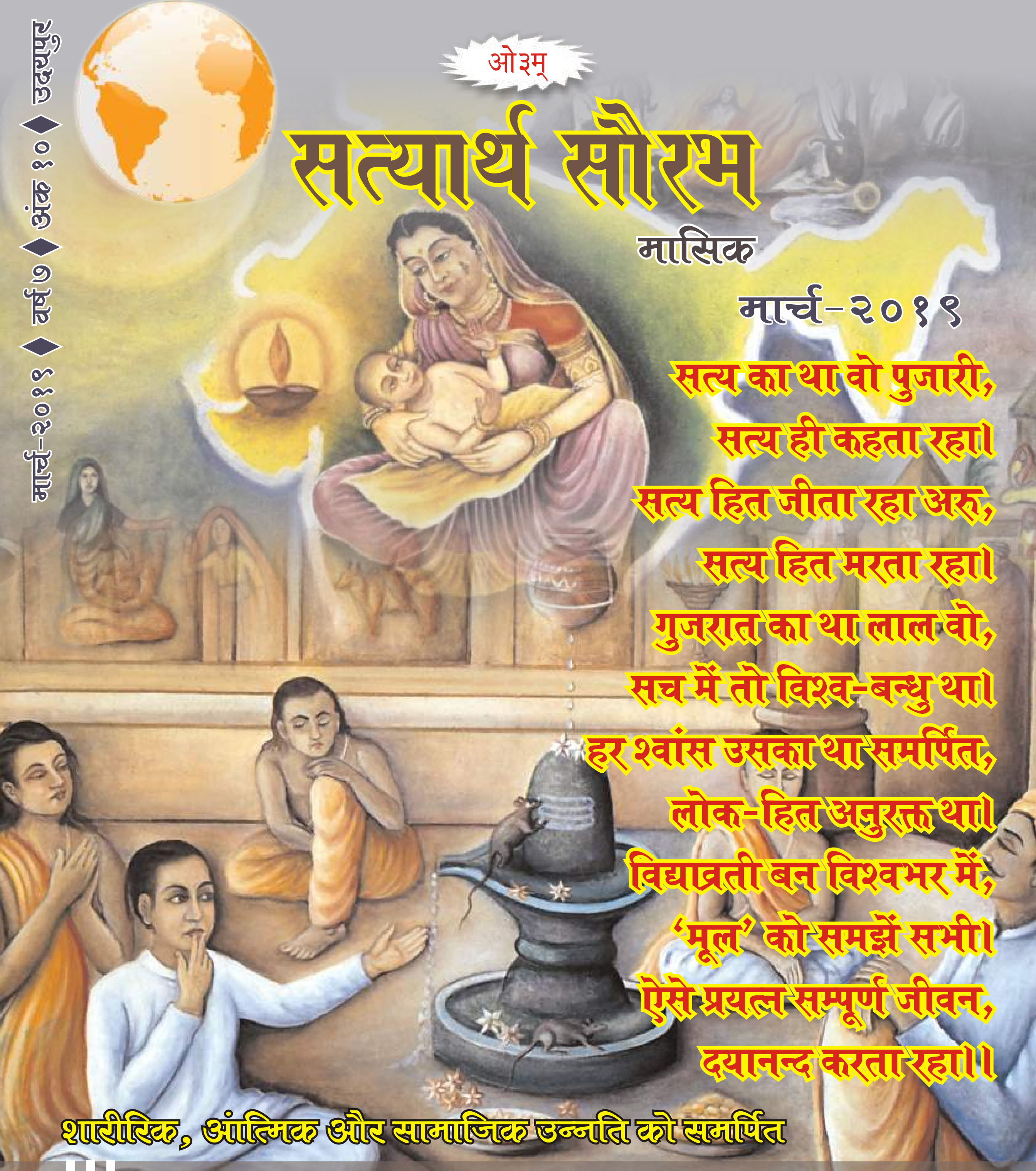

सत्य का था वो पुजारी,
सत्य ही कहता रहा।
सत्य हित जीता रहा अरु,
सत्य हित मरता रहा।
गुजरात का था लाल वो,
सच में तो विश्व-बन्धु था।
हर श्वांस उसका था समर्पित,
लोक-हित अनुरक्त था।
विद्याव्रती बन विश्वभर में,
'मूल' को समझें सभी।
ऐसे प्रयत्न सम्पूर्ण जीवन,
दयानन्द करता रहा।।

शारीरिक, आंत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ८७

श्रेष्ठ क्वालिटी की पहचान, एम डी एच मसाले हैं सारे भारत की शान
"एक तांगे वाला जो बना मसालों का शहंशाह"
MDH मसाले
असली मसाले सच - सच
Shahi Paneer masala
DEGGI MIRCH
Chana masala
Sabzi masala
Dal Makhani masala
Chunky Chat masala
Pav Bhaji masala
Sambhar masala
Kitchen King
Rajmah masala
HOTEL QUALITY Lal Mirch Powder
Garam masala
Peacock Kasoori Methi
AMCHUR POWDER
JEERA POWDER
BLACK PEPPER POWDER
HALDI POWDER
LAL MIRCH POWDER
DHANIA POWDER
KASHMIRI MIRCH
White Pepper powder
Chutney Podina masala
Curry powder
Dahivada Raita masala
Pani Puri masala
T-Plus masala
JAL JEERA masala
अन्य उत्कृष्ट उपयोगी उत्पादन
Soyatein
सोयाटीन वड़ियाँ
हवन सामग्री
हींग
केसर
दंत मंजन
MDH
Assorted Spices Box
GIFT PACK
गिफ्ट पैक की कीमत सिर्फ 550/- रु०
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015, 011 - 41425106 - 07 - 08
E - mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	11000 रु.	$ 1000
आजीवन	1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	400 रु.	$ 100
वार्षिक	100 रु.	$ 25
एक प्रति	10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर खाता संख्या : 310102010041518 IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२०
फाल्गुन शुक्ल प्रथम
विक्रम संवत्
२०७६
दयानन्दाब्द
१९५

March - 2019

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 3500 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

समाचार २७

हलचल २८

०४ वेद सुधा
०५ सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०३/१९
११ मुट्ठी से मसले जाओगे
१२ आर्य मान्यताओं के पुनः संस्थापक
१५ शिक्षा पर भारी परीक्षा
१७ वेद विवेचना
२१ ईश्वर के अस्तित्व की वैज्ञानिकता-७
२२ खत्म होता आरक्षण का उद्देश्य
२४ स्वभाषा का महत्व
२९ स्वास्थ्य- ऊँटनी का दूध
३० सत्यार्थ पीयूष- एकेश्वरवाद

स्वामी: श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ७ अंक - १०

मुद्रण: द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 09829063110
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

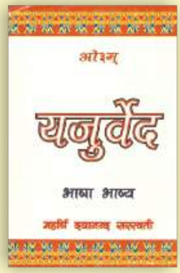

ओ३म्

वेद सुधा

अंधकार से उपर उठो

उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्तऽउत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।। - यजुर्वेद २०/२१, २७/१०, ३५/१४, ३८/२४

यजुर्वेद में मंत्र आया ''उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्'' अर्थात् हम लोगों ने (तमस) अंधकार या पापों या पापों के अंधकार से (उपरि) उपर उठकर (स्वः पश्यन्त) प्रकाश को देखा और परमप्रकाशक ईश्वर को पा लिया। आगे बढ़कर देखा तो अधिक तेज वाले प्रकाश को पाया और आगे बढ़े तो हर प्रकाशित व प्रकाशक वस्तु में उसी परमप्रकाशक प्रभु की प्राप्ति हुई।

मनुष्य जब तक अपने स्वार्थों के वशीभूत काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष की कलुषित भावनाओं से घिरा रहता है तब तक वह प्रकाश को नहीं पा सकता। सत्य के प्रकाश को पाने के लिए मनुष्य को इन कलुषित भावनाओं के अंधकार और इसके जनक स्वार्थ की भावना को छोड़कर उपर उठना पड़ता है। जिस प्रकार रात्रि के उपरान्त सूर्योदय के पश्चात् भी यदि कोहरा छाया हुआ हो तो हमें प्रकाशक सूर्य के दर्शन नहीं होते, उसी प्रकार प्रकाश को पाने के लिए इस कोहरे रूपी अंधकार अर्थात् अज्ञानता, अबोधता, स्वार्थ जैसी कलुषित भावनाओं को त्याग कर, उपर उठना होता है। मनुष्य का यह उपर उठना भी एक क्रमिक विकास है जिस प्रकार घर की छत पर पहुँचने के लिए हमें सीढ़ी दर सीढ़ी उपर चढ़कर छत पर पहुँचना होता है ठीक

उसी प्रकार अंधकार को छोड़कर प्रकाश की ओर जाना भी सीढ़ी दर सीढ़ी उपर चढ़ना होता है।

इसे समझने के लिए हमें अष्टांग योग के सूत्रों को भी समझना चाहिए। यम नियमों का पालन किए बिना आसन प्राणायाम करने का अपेक्षित लाभ नहीं मिल पाता और यम नियम धारण किए बिना केवल कुछ आसन प्राणायाम का प्रदर्शन करने से कोई व्यक्ति योगी नहीं कहलाता। ठीक उसी प्रकार अंधकार से उपर उठकर प्रकाश को पा लेने की यात्रा भी एक क्रमिक विकास की यात्रा है। इसमें पहले ''सवितर्दुरितानि परासुव'' अर्थात् अपने समस्त दुर्गुणों, दुर्व्यसनों को छोड़कर हम ''यद् भद्रं तन्न आसुव'' अर्थात् अपने लिए शुभ व कल्याणकारी भावनाओं को प्राप्त करने की आशा कर सकते हैं।

''तमसो मा ज्योतिर्गमय'' अंधकार से प्रकाश की ओर चलने की यात्रा का क्रम, अंधकार को छोड़ने से ही प्रारम्भ होता है। यहाँ 'तमस' का अर्थ केवल अंधकार नहीं अपितु पापों का अंधकार भी है। पापों को छोड़े बिना पुण्य कर्म नहीं किए जा सकते। जैसे बर्तन को ठीक से साफ किए बिना उसमें शुद्ध जल भरकर भी पीने योग्य नहीं रह पाता ठीक उसी प्रकार पापों के पूर्ण त्याग के बिना पुण्य कर्म कर पाना संभव नहीं है। पापों का विष चाहे थोड़ी ही मात्रा में क्यूँ ना हो वह मनुष्य के क्रमिक विकास में बाधक बनता है।

अंधकार से उपर उठकर जब हम प्रकाश को देखते हैं तो अक्सर हमारी आँखें चुंधिया जाती हैं जैसे अंधेरी सड़क पर अचानक सामने से आए वाहन की तीव्र रोशनी में कुछ दिखाई नहीं देता और हमारी स्थिति प्रकाश होते हुए भी पुनः एक अंधे

सरीखी हो जाती है। ठीक उसी प्रकार जैसे अमावस्या की रात्रि में टिमटिमाते तारे को ही परम प्रकाश पुंज समझ लेना या फिर पूर्णिमा के चाँद को ही समस्त प्रकाश का स्रोत मान लेना या फिर सूर्य को ऐसा समझ बैठना, मनुष्य की अबोधता है। 'तमस उपरि' में ये क्रमिक विकास उत्तरोतर उपर बढ़ते रहने की प्रेरणा जो इस वेद मंत्र में दी गई है वह हमें इन सभी प्रकाशित व प्रकाशक वस्तुओं से भी उपर जाने की प्रेरणा देती है। मील के पत्थरों को ही अपनी मंजिल मानकर रुक जाने वाले कभी अपने उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर पाते। यदि सीधे स्पष्ट शब्दों में कहें तो ये वेद मंत्र हमें गुरूडमवाद से बचने की प्रेरणा देते हुए उसी एक सर्वज्ञ को पाने की ओर इशारा करता है। यदि हम इसे और अधिक सरल शब्दों में समझें तो 'तमस उपरि' में अंधकार से उपर उठकर प्रकाश को पाने की यह यात्रा उस परमपिता परमेश्वर तक पहुँचती है जिससे इस संसार की प्रत्येक वस्तु प्रकाशित हो रही है।

आइये! इस वेद मंत्र की भावना को समझकर अन्तर्यात्रा को प्रारम्भ करें और अपने ही अन्दर अपनी आत्मा में विराजमान उस सर्वान्तर्यामी परमपिता परमेश्वर को अनुभूत कर उसके प्रकाश से प्रकाशित हो जाएँ और अंधकार-तमस रूपी कलुषित भावनाओं से सदा सर्वदा के लिए मुक्ति पालें।

नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'
६०२ जी एच , सैक्टर २०, पंचकूला
चलभाष- ०९४६७६०८६८६, ०१७२४००१८९५

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०३/१९

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (अष्टम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	वि १		ध १	■	२ अ	२	२	श २	■
३	रो	३	■	४	हीं ४	■	अग् ५	५	दि ५
६ सां	६	■	७	र ७	७	णु ७	■	८	न्न ८

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. सृष्टि के विषय में वेदादि शास्त्रों का अविरोध है वा विरोध?
२. कारण रूप सर्वत्र फैले द्रव्य को इकट्ठा करने से क्या उत्पन्न हुआ?
३. जब एक कार्य में एक ही विषय पर विरुद्ध वाद हो तो उसे क्या कहते हैं?
४. क्या आकाश की उत्पत्ति होती है?
५. जब आकाश और वायु का प्रलय नहीं होता, अग्न्यादि का होता है तब किस क्रम से सृष्टि-उत्पत्ति होती है?
६. कोई भी पदार्थ बिना तत्त्वों के मेल से नहीं बन सकता, इसका विचार किस दर्शन में किया है?
७. न्याय दर्शन में किससे सृष्टि की उत्पत्ति मानी है?
८. ओषधियों से क्या बनता है?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०१/१९ का सही उत्तर

१. परमात्मा २. प्रसिद्ध ३. देखना ४. बीज
५. सुषुप्ति ६. दया ७. उपादान कारण

"विस्तृत नियम पृष्ठ २० पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ अप्रैल २०१९

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

२७ मार्च

कर्मयोगी, भामाशाह महाशय धर्मपाल जी के ९५वे जन्मदिवस के अवसर पर न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार के सभी सदस्यों की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ। महाशय जी के निरामय दीर्घायुष्य हेतु हम सभी प्रभु चरणों में नत् हैं।

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश
अब ४००० रु. सैकड़ा
सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग अब एक हजार प्रतियों के लिए
१५००० रु.

तांगे वाले से पद्मभूषण तक

मृत्यु तो हरेक को आती है परन्तु हर कोई वास्तविक जीवन नहीं जी पाता। विरले ही होते हैं जो समय की रेत पर अपने निशान छोड़ जाते हैं। ये वे लोग होते हैं जिन्होंने जीवन और मृत्यु के दर्शन को आत्मसात किया होता है। और ऐसा कर पाना आसान नहीं है। मोती उसे ही प्राप्त होते हैं जो सागर में गहरे पैठता है। किनारे पर बैठे रहने वाले के हाथ कुछ नहीं लगता। भौतिक उपलब्धियों में डूबे रहने वाले ब्रह्मवर्चस्व को प्राप्त नहीं करते। वेद माँ कहती है यदि ब्रह्मवर्चस्व प्राप्त करना चाहते हो तो आयु, धन, यश, कीर्ति सब कुछ अर्जित करो और प्रभु अर्पण कर दो अर्थात् मानवता को समर्पित कर दो। अगर आप वैभव में लिप्त हो गए तो आगे का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है। अतः यह अन्तर्मन से जानना आवश्यक है कि सभी प्राप्त उपलब्धियाँ प्रभु की ही हैं अतः उनका त्यागपूर्वक उपभोग करो।

यजुर्वेद के ४०वें अध्याय के पहले मन्त्र में यही फलसफा समझाया है।

ईशावास्यमिदꣳसर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।।

> सबसे बड़ा पुण्य है परहित,
> परहित है तीरथ-धाम।
> परहित में जब प्रेम बढ़े तो,
> जग में होता नाम।। - महाशय जी

मन्त्र में उपदेश दिया है कि संसार में जो कुछ भी है वह सब परमपिता परमात्मा का है अतः उसका उपभोग तो करो परन्तु त्यागपूर्वक। जो विरला मनुष्य इसे समझ लेता है उसे देने में आनंद आने लगता है।

'खाने से ज्यादा खिलाने में आनन्द है' इसे अनेकानेक बार दोहराने वाले मान्य महाशय धर्मपाल जी ने उक्त वेद मन्त्र को जीवन में उतार लिया है। महाशय जी अनेक वर्षों से प्रतिदिन अग्निहोत्र करते हैं। अग्निहोत्र तो सहस्रों व्यक्ति प्रतिदिन करते हैं परन्तु केवल कर्मकाण्ड के रूप में, परन्तु महाशय जी ने यज्ञ की आत्मा को अर्थात् 'इदं न मम- यह मेरा नहीं है' को धारण कर लिया है यही कारण है जब वे परोपकारार्थ अपना संबल प्रदान करते हैं तो उनके चहरे की चमक देखते ही बनती है।

अनेक लोग सोचते हैं कि धन प्रसिद्धि का कारण होता है। महाशय जी की प्रसिद्धि का यही कारण है। परन्तु वे गलत हैं उनकी सोच गलत है। धनी तो संसार में कितने आते हैं कितने चले जाते हैं कोई उनका नाम तक नहीं जानता। ख्याति वे ही प्राप्त करते हैं, जीवन उनके ही अनुकरणीय होते हैं, यशःसुरभि उनकी ही प्रसरित होती है जो त्याग करते हैं। भामाशाह का नाम आज सैकड़ों वर्ष बाद भी हमारी श्रद्धा के केन्द्र में है तो उसका कारण राष्ट्र की आवश्यकता की पूर्ति के लिए उनके द्वारा किया गया त्याग है। 'इदं राष्ट्राय इदं न मम' कहकर उन्होंने वह सर्वमेध यज्ञ न किया होता तो आज भामाशाह को कौन जानता?

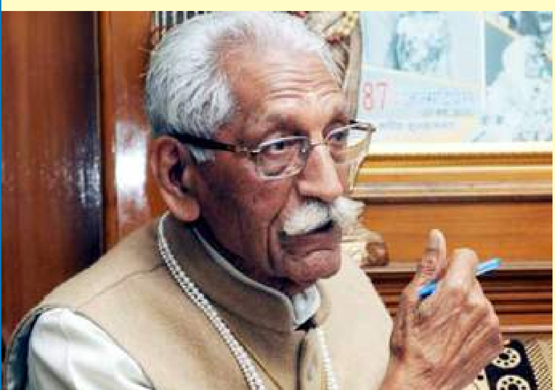

एक बार आर्य समाज के किसी कार्यक्रम में एक विद्वान् उपदेशक अत्यन्त प्रभावी उपदेश कर रहे थे। एक व्यक्ति जो सबसे पीछे बैठा था उसने उठकर ५००० रुपये दान की घोषणा कर दी। अब क्या था तालियाँ बजने लगीं। समाज के अधिकारियों ने उसे आदर के साथ मंच पर आमंत्रित कर बैठाया। उस व्यक्ति ने कहा कि देखो धन की यह महिमा होती है मैं मंच पर इसी कारण आ पाया। उपदेशक महोदय ने विनम्रता के साथ कहा- महाशय यह सम्मान आपके धन के कारण नहीं आपके त्याग के कारण है। जब आप पीछे बैठे थे धनी तो आप तब भी थे पर सभा में प्रशंसित तभी हुए जब आपने त्याग किया। आशा है यह

उद्धरण यश और कीर्ति के दर्शन को समझाने में समर्थ होगा।

महाशय धर्मपाल जी का जीवन पुरुषार्थ और प्रारब्ध का संगम है। उनके जीवन का निर्माण संघर्ष की तपती भट्टी में हुआ है। पाकिस्तान के सियालकोट स्थित एक मुहल्ले में पिता चुन्नीलाल जी व माता चन्नन देवी जी के घर में २७ मार्च, १९२३ को उनका जन्म हुआ। पाँच साल की उम्र में उनका स्कूल में दाखिला करवा दिया गया, लेकिन स्कूल में मन नहीं लगता था। पढ़ाई की बात आते ही कोई न कोई बहाने तलाशने लग जाते थे। जैसे-तैसे पाँचवीं तक पढ़ा। फिर उनके पिताजी ने अपनी मसाले की दुकान में काम के लिए लगा दिया। इस दौरान तजुर्बे के लिए कई और काम सीखे। उनकी दुकान खूब चलती थी। कुछ दिन रेहड़ी पर मेहंदी की पुड़िया बेची। उनके परिवार में दस लोग थे माता-पिता के अलावा भाई धर्मवीर, वे स्वयं, सतपाल और पाँच बहनें दुर्गा देवी, शान्ति देवी, लीलावती, सत्यवन्ती और संतोष। घर में दो भैंसें थीं। पौष्टिक खुराक के अलावा कुश्ती, खेल-कूद आदि खूब चल रहा था जिन्दगी में।

१८ साल का होने पर १९४२ में लीलावन्ती जी के साथ शादी हो गई। देश विभाजन के दौरान सियालकोट छोड़ना पड़ा, क्योंकि पूरा इलाका दंगे-फसाद की आग में बुरी तरह जलने लगा था। मार-काट के बीच जैसे-तैसे अमृतसर पहुँचे और वहाँ अपने एक आढ़ती के यहाँ शरण ली। कठिनाइयाँ बहुत गहरी थीं। काम की तलाश में दिल्ली आ गए। पिता ने १५००० रुपये दिए। कुछ काम-धंधा न मिला तो ६५० रुपयों से तागा खरीद लिया। तांगा चलाने लगे। उन दिनों दो-दो आने में सवारी कनाट प्लेस से करौल बाग ले जाते थे। इस दौरान पिता समेत पूरा परिवार दिल्ली आ गया। तांगे का काम छोड़कर तब उन्होंने अजमल खाँ रोड पर गुड़-शक्कर का छाबा लगाया। उससे भी मन ऊब गया। मन मसालों के पुराने कारोबार के लिए प्रेरित करता था। फिर अजमल खाँ रोड पर खोखा बनाकर दाल, तेल, मसालों की दुकान शुरू कर दी। तजुर्बा था, इसलिए काम चल निकला। ईमानदारी तथा शुद्धता आप की सफलता की नींव बन गयी। १९६० में कीर्ति नगर में फैक्ट्री लगाई और इस तरह लम्बे संघर्ष के बाद दिल्ली में एक मुकाम पा लिया। देश में ही नहीं विदेशों में भी एम.डी.एच. मसालों की धूम मचने लगी और घर-घर में उनके मसालों का इस्तेमाल होने लगा। आज देश में ही नहीं विदेशों में यूरोप, दुबई तक एम.डी.एच. अपना जलवा बिखेर रहा है। चीन की रिसर्च फर्म हुरुन इण्डिया ने भारतीय अमीरों की एक लिस्ट जारी की है। उसमें बताया गया है कि भारत में सबसे बुजुर्ग अमीर महाशय धर्मपाल गुलाटी हैं।

जैसे ही संघर्षों से कुछ अवकाश मिला महाशय जी की समाजसेवा प्रारम्भ हो गयी। १९७५ में, सुभाष नगर, नई दिल्ली में आपने एक १० बिस्तरों का अस्पताल शुरू किया। फिर जनकपुरी में आपने अपनी माताश्री के नाम से माता चन्नन देवी हॉस्पीटल खोला जो आज ३०० बिस्तरों के एक मल्टीस्पेशिलिटी अस्पताल के रूप में पीड़ित मानवता की सेवा कर रहा है। समाज सेवा के काम को आगे बढ़ाते हुए महाशय जी ने, महाशय धर्मपाल ट्रस्ट के जरिये दिल्ली में स्कूल, अनाथ आश्रमों, अस्पताल, गौशाला और अनेकों सामाजिक कामों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

मनीषियों का कथन है कि सुख-दुःख जीवन रूपी सिक्के के दो पहलू हैं अतः इन दोनों अवसरों पर जो व्यक्ति समभाव रख पाता है वह धन्य है। कष्ट के क्षणों में महाशय जी इस कसौटी पर खरे उतरे। धर्मपत्नी लीलावन्ती जी के एवं प्रिय पुत्र संजीव जी के वियोग के हृदयविदारक क्षणों में आपने असीम धैर्य का प्रदर्शन किया।

आर्यसमाज से महाशय जी का माँ-पुत्र के सामान रिश्ता है। महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों में आपकी गहरी आस्था है। सुदूर आदिवासी इलाकों में विद्या की ज्योति जलाने के उद्देश्य से आपने अनेक विद्यालयों की स्थापना की। आज आर्यसमाज की अनेक संस्थाएँ महाशय जी के नेतृत्व में पुष्पित तथा पल्लवित हो रहीं हैं जिनमें से कुछ के नाम यहाँ दे रहे हैं -

"नेक नीयती सीपी है, इसमें, सद्गुण रूपी स्वाति-नक्षत्र की जितनी भी बूँदे आएँगी, सारी की सारी मोती बन जाएँगी।। - महाशय जी"

एम.डी.एच. न्यूरोसाईस संस्थान (दिल्ली), ज्योति आप्थलमिक लेजर सैन्टर (नई दिल्ली), महाशय संजीव आरोग्य केन्द्र; ऋषिकेश (उत्तराखण्ड), एम.डी.एच. स्कूल; बेदगी (कर्नाटक), महाशय धर्मपाल हृदय संस्थान सी १- जनकपुरी (नई दिल्ली), माता लीलावन्ती सरस्वती शिशु मंदिर-टैगोर गार्डन (दिल्ली), एम.डी.एच. संजोग सेवा; कीर्ति नगर (नई दिल्ली), एम.डी.एच. पार्क; नागौर (राजस्थान), महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. सभागार; आर्य समाज नारायण विहार (नई दिल्ली), महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या

निकेतन; धनश्री, जिला-कार्बी, आंग्लांग (आसाम), महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द विद्या निकेतन; देवघर (झारखण्ड), एम.डी.एच. वृद्ध सेवा सभागार; आर्य महिला आश्रम, राजेन्द्र नगर (नई दिल्ली), महाशय धर्मपाल यज्ञशाला; आर्य समाज त्रिनगर (नई दिल्ली), महाशय धर्मपाल आर्य स्थाई निधि; आर्य केन्द्रीय सभा (नई दिल्ली), महाशय धर्मपाल दयानन्द विद्या निकेतन; भामल, झाबुआ (म. प्र.), माता लीलावन्ती आर्य कन्या गुरुकुल; पिल्लूखेड़ा (हरियाणा), महाशय धर्मपाल वेद अनुसंधान भवन; करनाल (हरियाणा), महाशय धर्मपाल ओपन एयर थिएटर; भिवानी जेल (हरियाणा), महाशय धर्मपाल स्वावलम्बन गृह; सिरसा जेल, सिरसा (हरियाणा), महाशय धर्मपाल प्रवेश द्वार; आर्य अनाथालय (हरियाणा), महाशय धर्मपाल स्थाई निधि; गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा), महाशय धर्मपाल भवन; आर्य समाज, खजूरी खास (नई दिल्ली), महाशय धर्मपाल स्थाई निधि; गुरुकुल झज्जर (हरियाणा), महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वेद अनुसंधान केन्द्र; कालीकट, कोझीकोड (केरल), महाशय धर्मपाल विश्राम गृह; भिवानी जेल (हरियाणा), महाशय धर्मपाल जी गौशाला (औचंदी), महाशय धर्मपाल विद्या मन्दिर; सुभाष नगर (नई दिल्ली), महाशय धर्मपाल गौशाला; वनिता आश्रम, देहरादून (उत्तराखण्ड), माता लीलावन्ती सरस्वती विद्या मन्दिर; हरिनगर (नई दिल्ली), महाशय धर्मपाल आर्य संवाद केन्द्र (नई दिल्ली), महाशय धर्मपाल विद्या मन्दिर; ढांसा (दिल्ली), लीलावन्ती लैबोरेट्री (नई दिल्ली), आकांक्षा आई.वी.एफ. सैन्टर (नई दिल्ली), माता चन्नन देवी हॉस्पीटल; सी-१ जनकपुरी (नई दिल्ली), एम.डी.एच. परिसर निर्वाण न्यास; अजमेर (राजस्थान), महाशय चुन्नीलाल सरस्वती बाल मन्दिर; हरिनगर (नई दिल्ली), एम.डी.एच. इण्टरनेशनल स्कूल; सेक्टर-६ द्वारका (नई दिल्ली), एम.डी.एच. इन्टरनेशनल स्कूल; जनकपुरी (नई दिल्ली), महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वानप्रस्थ आश्रम; परली बैजनाथ, जिला-बीड (महाराष्ट्र), महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन; बामनिया, जिला-झाबुआ (मध्यप्रदेश), एम.डी.एच. गौशाला; ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड, अजमेर (राजस्थान), महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. गौशाला; जीवन प्रभात, गाँधीधाम, कच्छ (गुजरात), महाशय धर्मपाल अन्तर्राष्ट्रीय अतिथिगृह; ग्रेटर कैलाश-१ (दिल्ली), महाशय धर्मपाल कन्या छात्रावास गुरुकुल; चोटिपुरा, जिला-मुरादाबाद (उत्तरप्रदेश), महाशय धर्मपाल आर्य स्थाई निधि; दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (नई दिल्ली), महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. सभागार; आर्य समाज, जनकपुरी बी ब्लॉक (नई दिल्ली), महाशय धर्मपाल वनवासी सभागार; आर्य समाज तिहाड़ग्राम (नई दिल्ली), महाशय धर्मपाल संस्कृत भवन; गुरु विरजानन्द संस्कृतकुलम, हरिनगर (नई दिल्ली), महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. विद्यालय विंग; गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार (उत्तराखण्ड), महाशय धर्मपाल सेवा भवन; आर्य समाज डी.सी.एम. रेलवे कॉलोनी (नई दिल्ली), महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. सभागार; आर्य महिला आश्रम, राजेन्द्र नगर (नई दिल्ली), महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. सभागार; आर्य समाज कीर्ति नगर (नई दिल्ली), महाशय धर्मपाल छात्रावास भवन; बामनिया (मध्यप्रदेश), महाशय संजीव कुमार धर्मार्थ औषधालय; गाँव गुल्लरवाला, करसौली, तहसील-नालागढ (हिमाचल प्रदेश), माता लीलावन्ती श्रीकृष्ण वैदिक कन्या इन्टर कॉलेज; खुशीपुरा, मथुरा (उत्तरप्रदेश), महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. आरोग्य मंदिर; सेक्टर-७६ फरीदाबाद (हरियाणा), सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ (दयानन्द धाम) एम.डी.एच. परिसर; उदयपुर (राजस्थान), महाशय संजीव पब्लिक स्कूल; उत्तरकाशी (उत्तराखण्ड), महाशय धर्मपाल सांस्कृतिक यज्ञ केन्द्र (राजस्थान), माता लीलावन्ती वैदिक संस्कृति-प्रशिक्षण केन्द्र, उदयपुर (राजस्थान)।

ऋषि के महान् कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की रचनास्थली को विश्वप्रसिद्ध प्रेरक स्मारक बनाने हेतु कृतसंकल्पित श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर को आप अध्यक्ष के रूप में संरक्षण तथा ऊर्जा प्रदान कर रहे हैं, यह हम न्यास के सभी न्यासियों का सौभाग्य है। यह सौभाग्य हमें दीर्घकाल तक प्राप्त होता रहे यह हम सबकी कामना है।

महाशय जी आज ९५ वर्ष के हो गए हैं यह उनका ९६ वाँ जन्म दिवस है। महाशय जी द्वारा समाज सेवा के क्षेत्र में किये गए अद्वितीय योगदान के फलस्वरूप भारत सरकार ने वर्ष २०१६ का पद्मभूषण पुरस्कार महाशय जी को प्रदान किया है जो निःसंदेह समीचीन है। हम आर्यजन इस हेतु भारत सरकार को हार्दिक धन्यवाद प्रदान करते हैं। हीरे को पहचानने की उनकी पारखी नजर को नमन करते हैं ।

आज भी महाशय जी का जीवन यज्ञ-योग-धर्म की त्रिवेणी का संगम है। मानवता से उनका प्यार सभी सीमाओं से परे है। आप उनकी आँखों में हरेक के प्रति स्नेह का भाव स्पष्ट देख सकते हैं। परोपकार के कार्यों के लिए उनकी ऊर्जा असीम है। वे इस युग के महानायक हैं उनका जीवन प्रेरणा का अजस्र स्रोत है। हम सब उनके प्रति अनुरक्त जन प्रभु से यही प्रार्थना करते हैं कि उन्हें १०० वर्ष से भी अधिक की निरामय आयु प्रदान करें ताकि उनकी सेवाओं व प्रेरणा से समाज लाभान्वित होता रहे।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

चौदह फरवरी २०१९ का वह मनहूस दिन जिस दिन आतंकवादियों ने एक षड्यंत्र के अंतर्गत जम्मू से कश्मीर जा रहे सीआरपीएफ के कानवाय पर घात लगाकर आत्मघाती हमला किया और भारी मात्रा में विस्फोटक से भरी एक गाड़ी को कानवाय की बस से टकरा दिया। फलस्वरूप हमारे ४० जवान शहीद हो गए। इस काफिले में करीब ७८ गाड़ियाँ थीं और २५०० जवान शामिल थे। उसी दौरान बाईं ओर से ओवरटेक कर विस्फोटक से लदी एक कार आई और उसने सीआरपीएफ की बस में टक्कर मार दी। आतंकवादी ने जिस कार से टक्कर मारी थी, उसमें करीब ६० किलो विस्फोटक था। इसकी वजह से विस्फोट इतना घातक हुआ कि इसमें ४० जवान शहीद हो गए। इस घटना पर पीएम मोदी ने सीधे तौर पर कहा है कि आतंकी बहुत बड़ी गलती कर चुके हैं और अब उन्हें इसका अंजाम भी भुगतना होगा। यह दुर्घटना एक टीस की तरह समस्त देशवासियों से चिपक गयी है। देश उबल रहा है। आतंकवादियों और उनके आका पाकिस्तान के प्रति किसी प्रकार की रियायत करने के पक्ष में देश नहीं है। देश का बच्चा बच्चा चाहता है कि इस बार पाकिस्तान को ऐसा सबक सिखाया जाय कि वह दुबारा भारत में आतंकवाद को प्रश्रय देने से पहले सौ बार सोचे।

प्रधान मंत्री जी ने स्पष्ट कहा है कि उनकी मनःस्थिति देश से भिन्न नहीं है। पाकिस्तान को एम.एफ.एन के स्टेटस से हटाने, उसके आयात पर आयात शुल्क बढ़ाने व अलगाववादी नेताओं से उनकी सरकारी सुविधाएँ व सिक्योरिटी वापस लेने के निर्णय से स्पष्ट हो रहा है कि सरकार इस बार कुछ अलग व सख्त करने हेतु प्रतिबद्ध है। इसी मध्य १८ घण्टे चली एक मुठभेड़ में १४ फरवरी को सीआरपीएफ काफिले पर हुए आत्मघाती हमले से जुड़े आतंकवादी 'कामरान' सहित जैश-ए-मोहम्मद के तीन आतंकवादी मारे गए हालाँकि इस मुठभेड़ में सेना के एक मेजर और चार सुरक्षाकर्मी भी शहीद हो गए।

इन्ही दिनों एक बहस फिर चल पड़ी है कि जब इजराइल जैसा छोटा सा देश उस स्थिति में है कि आतंकवादी उसको छेड़ने से पहले दस बार सोचते हैं तो भारत का ऐसा दबदबा क्यों नहीं हो सकता? यह ठीक है कि इजरायल के मोसाद के कमाण्डो विश्वभर में प्रसिद्ध हैं, परन्तु ऐसे साजो सामान व तकनीक से सम्पन्न कमाण्डो किसी के भी होना कोई बहुत बड़ी बात नहीं है। असल बात है देश की इच्छा शक्ति। आज जब इजरायल की बात जोरों से की जा रही है तो म्यूनिख के १९७२ के ओलिम्पिक स्मरण हो आते हैं। फिलिस्तीनी आतंकवादियों (ब्लैक सितम्बर) ने घात लगाकर म्यूनिख ओलिम्पिक में भाग ले रहे ११ इजरायली खिलाड़ियों पर

आक्रमण किया, उन्हें बंधक बनाया। ब्लैक सितम्बर के ८ आतंकवादी खिलाड़ियों के वेश में ६ फीट ऊँची दीवार फांदकर बड़े आराम से ओलिम्पिक खेलगाँव में प्रविष्ट हो गए तथा इजरायली खिलाड़ियों पर संक्षिप्त प्रतिरोध के बाद कब्जा कर लिया। आतंकवादियों की माँग कि इजरायल २३४ बन्दियों को छोड़ दे को इजरायल ने दृढ़ता से ठुकरा दिया। इस घटना की परिणति ११ इजरायली खिलाड़ियों की हत्या से हुयी। प्रत्युत्तर में इजरायल ने फिलिस्तीनी कैम्पों पर हमला कर २०० से अधिक फिलिस्तीनियों को मार गिराया। क्या इसी के साथ इतिश्री हो गयी? हमारे अनेक पाठकों को संभवतः जानकारी न हो कि इजरायल ने, इन आतंकवादियों का सहयोग करने का जिन पर सन्देह था ऐसे लोगों की सूची बनायी और तत्कालीन इजरायली प्रधानमंत्री गोल्डा मायर ने उनकी हत्या का आदेश दिया। क्या आपको पता है कि इस सब में कितना समय लगा? पूरे बीस वर्ष। इस पूरे काल में

इजरायल के किसी नेता ने न तो इस की निन्दा की, न आने वाले नेताओं ने इन आदेशों को वापस लिया। न किसी ने उस बनी हुयी लिस्ट को चुनौती दी। यद्यपि इस 'रैथ ऑफ गॉड' नामक ऑपरेशन के प्रथम शिकार वायेटर की इटली में हत्या के साथ ही आलोचना प्रारम्भ हो गयी थी कि वायेटर का ब्लैक सितम्बर आतंकवादी संगठन से कोई लेना देना नहीं था। परन्तु मोसाद के कदम नहीं रुके।

मोसाद के प्रमुख से पूछा गया कि क्या उनके देश ने यह सब बदला लेने के लिए किया तो उनका स्पष्ट उत्तर था नहीं। यह हमने इसलिए किया था कि सामने वालों के दिल में हमारा ऐसा डर बैठ जाय कि वे फिर से कोई ऐसा घृणित मनसूबा बनाने से पहले सौ बार सोचें। उक्त सूची में सम्मिलित व्यक्ति को मारने से पहले मोसाद उसके परिवार के पास एक गुलदस्ता भेजता था जिसके कार्ड पर लिखा होता था- We don' t forget, We don' t forgive अर्थात् 'न हम भूलते हैं न माफ करते हैं' तो यह है वो जज्बा जिसने इजरायल को इजरायल बनाया है। जानते हैं जब उक्त सूची के जिन सदस्यों को गोली से मारा उन्हें गिनकर ११ गोलियाँ मारीं गयीं। यह स्पष्ट सन्देश था कि ११ खिलाड़ियों को मारने वालों को दण्ड दिया जा रहा है इसको छिपाया नहीं जा रहा, बचे हुए कितने भी चौकन्ने हो जाय और कार्य करने में कितना भी समय लग जाय पर छोड़ा किसी को नहीं जाएगा। यह है वो जज्बा जिसने इजरायल को यह प्रतिष्ठा दी है। मोसाद के कमाण्डो कोई आसमान से सीखकर नहीं उतरे हैं। हाँ वे व उनसे भी अधिक उनके राजनेता धुन के पक्के हैं। जब उक्त लिस्ट के तीन सदस्यों को मार पाने में मोसाद इस कारण सफल नहीं हो पा रही थी क्योंकि वे बेरूत में सुरक्षा में रह रहे थे, तो इन्होंने ऑपरेशन 'स्प्रिंग ऑफ यूथ' तैयार किया। जिसमें इजरायल की एयर फोर्स, नेवल फोर्स, आक्रमणकारी फोर्स सेरेट मतकल तथा मोसाद सम्मिलित थे। वे समुद्र के रास्ते बेरूत पहुँचे। पूर्ण खामोशी के साथ। फिर सैलानियों के रूप में पहले से चिह्नित तीनों बिल्डिंगों के पास पहुँचे। इनमें से कुछ लोगों ने स्त्रियों का भेष बनाया था। तीनों शिकारों को उनके परिवार के समक्ष मार दिया गया। रक्षकों से अत्यल्प सामना हुआ और वे जिस रास्ते आये आधा घण्टे में अपना काम कर उसी प्रकार निकल गए। इस बीच पेराट्रूपर्स ने पीएलओ के मुख्यालय समझे जाने वाली ६ मंजिला इमारत पर हमला कर दिया। इस ऑपरेशन में १०० से ऊपर फिलिस्तीनी खत्म किये गए। ऑपरेशन 'रैथ ऑफ गॉड' इसके बाद भी चलता रहा।

गत सर्जीकल स्ट्राइक में हमारे कमाण्डो ने यह सिद्ध कर दिया है कि वे ऐसी चुनौती देने में सक्षम हैं। परन्तु सेना से सर्जीकल स्ट्राइक का प्रमाण माँगने वालों का देश, याकूब मेनन जैसे आतंकवादी की रक्षार्थ रात को सुप्रीम कोर्ट खुलवाने वालों का और सुप्रीम कोर्ट खोलने वालों का देश, अफजल गुरु और ऐसे अनेक आतंकियों को महिमामंडित करने वालों को राष्ट्र-नेता बनाने वालों का देश अर्थात् हमारा देश इस मनःस्थिति के चलते कभी इजरायल नहीं बन सकता। खूंखार आतंकवादियों की मौत हो जाने पर एक पूरी जमात उन्हें बेचारा साबित करने में जुट जाय और फलस्वरूप अपने कर्तव्य को, जान की भी परवाह न कर निभाने वाले पुलिस अफसरों को, सात-सात अथवा और भी अधिक वर्षों तक जेल में सड़ना पड़े तो भी आप आशा करें कि यह देश इजरायल बन जाएगा तो यह दिवास्वप्न ही कहलाएगा। हमारे कमाण्डो मोसाद के कमाण्डो से किसी मायने में कम नहीं बस हमें सीखना है जो देश के खिलाफ है उसको निर्मूल करना है।

कश्मीर समस्या के क्रम में 'बिल्ली को देख कबूतर ने आँखें बन्द कर ली' से अब काम चलने वाला नहीं है। धारा ३७० समस्या का मूल है। आवश्यकता है कि अन्य राज्यों की भाँति कश्मीर भी हो। उसकी उन्नति भी उन्हीं की भाँति हो। वहाँ भी भारत के उद्योगपति उद्योगों की स्थापना करें। कुल मिलाकर कश्मीर भी भारत के अन्य राज्यों की तरह से एक राज्य है यह बात देश में ही नहीं कश्मीर के बच्चे-बच्चे के दिल में मजबूती से स्थापित हो जाय। वे समझें कि ऐसा होने में ही कश्मीर का सुखद भविष्य है। इसके विपरीत समझाने वाले स्वार्थी और देशद्रोही हैं, वे कश्मीर का भला नहीं चाहते। उनसे वैसे ही निपटना चाहिए। अत्यन्त आवश्यक है पत्थरबाज हों, निर्दोषों को मारने वाले हों, देश के खिलाफ बयान देने वाले हों, पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकी हों इनको इस सख्ती से नियंत्रित किया जाय कि देशद्रोह से पूर्व सौ बार सोचें।

- अशोक आर्य
नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

पुलवामा के शहीद जवानों को शत-शत नमन

अन्धों को दर्पण क्या देना,
बहरों को भजन सुनाना क्या।
जो रक्तपान करते उनको,
गंगा का नीर पिलाना क्या।।
हमने जिनको दो आँखे दीं,
वो हमको आँख दिखा बैठे।
हम शान्ति यज्ञ में लगे रहे,
वो श्वेत कबूतर खा बैठे।।
वो छल पे छल करता आया,
हम अड़े रहे विश्वासों पर।
कितने समझौते थोप दिए,
हमने बेटों की लाशों पर।।
अब लाशें भी यह बोल उठीं,
मत अन्तर्मन पर घात करो।
दुश्मन जो भाषा समझ सके,
अब उस भाषा में बात करो।।
वो झाड़ी हैं, हम बरगद हैं,
वो हैं बबूल हम चन्दन हैं।
वो है जमात गीदड़ वाली,
हम सिंहों का अभिनन्दन हैं।।
ऐ पाक तुम्हारी धमकी से,
यह धरा नहीं डरने वाली।
यह अमर सनातन माटी है,
ये कभी नहीं मरने वाली।।
तुम भूल गए सन् अड़तालिस,
पैदा होते ही अकड़े थे।
हम उन कबायली बकरों की,
गर्दन हाथों से पकड़े थे।।
तुम भूल गए सन् पैंसठ को,
तुमने पंगा कर डाला था।
छोटे से लाल बहादुर ने,
तुमको नंगा कर डाला था।।

तुम भूले सन् इकहत्तर को,
जब तुम ढाका पर ऐंठे थे।
नब्बे हजार पाकिस्तानी,
घुटनों के बल पर बैठे थे।।
तुम भूल गए करगिल का रण,
हिमगिरि पर लिखी कहानी थी।
इस्लामाबादी गुण्डों को,
जब याद दिलाई नानी थी।।
तुम सारी दुर्गति भूल गए,
फिर से बवाल कर बैठे हो।
है उत्तर खुद के पास नहीं,
हमसे सवाल कर बैठे हो।।
बिगड़ैल किसी बच्चे जैसे,
आलाप तुम्हारे लगते हैं।
तुम भूल गए हो रिश्ते में,
हम बाप तुम्हारे लगते हैं।।
बेटा पिटने का आदी है,
बेटा पक्का जेहादी है।
शायद बेटे की किस्मत में,
बर्बादी ही बर्बादी है।।
तेरी बर्बादी में खुद को,
बर्बाद नहीं होने देंगे।
हम भारत माँ के सीने पर,
जेहाद नहीं होने देंगे।।
तू रख हथियार उधारी के,
हम अपने दम से लड़ लेंगे।
गर एटम बम से लड़ना हो,
तो एटम बम से लड़ लेंगे।।
जब तक तू बटन दबायेगा,
हम पृथ्वी नाग चला देंगे।
तू जब तक दिल्ली ढूँढेगा,
हम पूरा पाक जला देंगे।।

यह कथन सारा आवाम कहे,
गर फिर से आँख दिखाओगे।
तुम सवा अरब के भारत की,
मुट्ठी से मसले जाओगे।।

साभार- अन्तर्जाल

शोक संवेदना

नहीं रहे विजय जी तायलिया

श्रीमान् विजय लाल जी तायल के निधन के समाचार से हम न्यास व आर्यसमाज से जुड़े सभी जन आहत हैं। हम सभी प्रभु से प्रार्थना भी कर रहे थे और आशा भी करते थे कि पूजनीय बाबूजी अपना सौ वाँ जन्मदिन अवश्य मना पायेंगे, पर विधाता की इच्छा कुछ और थी जिसके फलस्वरूप बाबूजी १५ फरवरी २०१९ को हम सबको और परिवारीजनों को पीछे छोड़ इस नश्वर संसार से विदा ले गए।

बाबूजी यज्ञ व सत्संग प्रेमी थे। उन्होंने अनेक पारिवारिक सत्संग अपने निवास पर आयोजित करवाए थे जिनमें आर्यजनों व बाबूजी के सभी परिवारीजनों की सहभागिता रहती थी। वे अपने जन्मदिन पर सादगी व श्रेष्ठ आयोजन की मिसाल कायम करते हुए यज्ञ अवश्य करवाते थे। आज उनके सौम्य, सरल व स्नेहिल व्यक्तित्व की स्मृतियाँ हमारे मन-मानस पर अंकित हैं। सारे परिवार में उदात्त सद्गुणों का प्रवेश आपकी संचेतना से ही प्रसूत हैं।

हम प्रभु से यही प्रार्थना करते हैं कि वे बाबूजी को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान देने की कृपा करें, तथा परिवारीजनों को उस मार्ग पर चलने की प्रेरणा दें जिससे उनकी स्मृति तथा यश चिरस्थायी हों।

– भवानी दास आर्य, मंत्री-न्यास

आर्य मान्यताओं के पुनः संस्थापक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन में अन्दर बाहर सत्य और सात्विकता ओतप्रोत थी। वे हर प्रकार के आडम्बर से परे थे। लोकोपकार उनका एकमात्र लक्ष्य था। परमात्मा ने उन्हें बुद्धिबल और नैतिक बल गजब का दिया था। उन्होंने समाज की स्थिति का तथा पुस्तकों का स्वाध्याय खूब किया था। उनकी स्मरण शक्ति कमाल की थी। व्याख्यान वे सरल और स्पष्ट भाषा में दिया करते थे। उनकी शैली मधुर और तर्कपूर्ण होती थी। उन्होंने सोई हुई हिन्दू जाति को जगाया। उसके खोए हुए गौरव को वापिस दिलाया। उसकी कायरता, अज्ञानता, भीरुता और अन्धविश्वास को धोया।

महर्षि दयानन्द ने डंके की चोट से ऐलान किया कि आर्य लोग जो आजकल हिन्दू कहलाते हैं भारतवर्ष के ही मूल निवासी हैं। इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि आर्य भारत में कहीं बाहर से आए थे। आर्यों का संस्कृत भाषा में साहित्य ही संसार में सबसे पुराना साहित्य है। संस्कृत के किसी ग्रन्थ में नहीं लिखा कि आर्य भारतवर्ष में कहीं बाहर से आकर बसे थे। इस देश का सबसे पहला नाम आर्यावर्त्त था अर्थात् आर्यों का देश। उससे पहले इसका कोई और नाम न था। इस प्रकार उन्होंने हिन्दुओं के मनोबल को बढ़ाया।

स्वामी जी हिन्दुओं की सभी कमियों और कमजोरियों के लिए पुराणों को जिम्मेदार मानते थे। वे पुराणों को महर्षि वेद व्यास जी की रचना नहीं मानते थे। वे लिखते हैं "जो अठारह पुराणों के कर्त्ता व्यास जी होते तो उनमें इतने गपोड़े न होते क्योंकि शारीरिक सूत्र, योगदर्शन के भाष्य आदि व्यास जी कृत ग्रन्थों को देखने से पता लगता है कि वे बड़े विद्वान्, सत्यवादी, धार्मिक, योगी थे। वे ऐसी झूठी बातें कभी न लिखते जैसी पुराणों में हैं।"

स्वामी जी मूर्तिपूजा को भारत के सारे अनिष्टों का मूल मानते थे। पुराणों ने ही मूर्तिपूजा को प्रोत्साहित किया और आर्यत्व की कब्र खोद दी। अवतारवाद, जन्म पर आधारित जाति-प्रथा, सती प्रथा, विधवा विवाह का निषेध आदि, अनेक ऐसी कुरीतियाँ जिनके कारण हिन्दू बदनाम हैं, सबको पुराणों में मान्यता प्राप्त है। पुराणों की ऐसी मान्यताएँ वेद विरुद्ध हैं। यदि पुराण और पौराणिक विचार हिन्दुओं में न होते तो ईसाईयों और मुसलमानों को हिन्दुओं के विरोध में कहने को कुछ भी न मिल पाता और न ही इतनी आसानी से हिन्दू मुसलमान और ईसाई बनते।

महर्षि दयानन्द सत्य के प्रबल पक्षधर थे। आर्य समाज के दस नियमों में चौथा नियम उन्होंने दिया- सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। वे मानते थे कि मनुष्य का आत्मा सत्य-असत्य को जानने वाला है। परन्तु पण्डित लोग अपनी प्रतिष्ठा, हानि और निन्दा के भय से सत्य को प्रकट नहीं करते। उन्होंने 'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' में उपनिषद् का निम्न श्लोक उद्धृत किया है -

न हि सत्यात्परो धर्मो नानृतात्पातकं परम्।
न हि सत्यात्परं ज्ञानं तस्मात्सत्यं समाचरेत्।।

अर्थात् सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है, झूठ से बढ़कर कोई पाप नहीं है और सत्य से बढ़कर कोई ज्ञान नहीं है। इसलिए सत्य का आचरण करें।

महर्षि दयानन्द दिखावे के बाहरी चिह्नों को धर्म से न जोड़ते थे। वे जब किसी को रुद्राक्ष पहने देखते थे तो उससे कहा करते थे कि इन गुठलियों के पहनने से क्या लाभ है? इससे मुक्ति नहीं होती। मुक्ति तो ज्ञान से होती है। मनुस्मृति में भी कहा गया है- **'न लिङ्गम् धर्म कारणं'** अर्थात् बाहरी चिह्नों से व्यक्ति धार्मिक नहीं बनता। धार्मिक तो शुभ आचरण से बनता है। महर्षि

मनु ने कहा है-

आचारः परमो धर्मः।

महर्षि दयानन्द मानते थे कि हमारा नाम आर्य है, हिन्दू नहीं। आर्य का अर्थ है श्रेष्ठ पुरुष। अरब के लोग काफिर और दुष्ट को हिन्दू कहते हैं। विदेशी मुसलमानों ने हमें हिन्दू नाम दिया है।

स्वामी जी श्री कृष्ण जी को एक महापुरुष मानते थे। सत्यार्थप्रकाश में वे लिखते हैं "देखो! श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अति उत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र धर्मात्माओं के समान है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मृत्यु तक बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा। और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाए हैं। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी, कुब्जा दासी से सम्भोग, परस्त्रियों से रासमण्डल, क्रीड़ा आदि झूठे दोष श्री कृष्ण जी में लगाए हैं। इसको पढ़-पढ़ा, सुन-सुना के अन्य मत वाले श्री कृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्री कृष्ण जी जैसे महात्माओं की झूठी निन्दा क्योंकर होती?"

महर्षि दयानन्द ने राष्ट्रीय स्वाभिमान को जगाया, विशुद्ध भारतीयता पर बल दिया। सत्य-असत्य विवेक की प्रवृत्ति को जगाया, बुद्धिवाद को बढ़ावा दिया, अन्धविश्वास और रूढ़िवाद का खण्डन किया।

स्वामी जी का दरबार मित्र, शत्रु सबके लिए खुला था। वे सबके साथ प्रेम से बर्ताव करते थे। परन्तु यदि कोई उनके साथ दुष्टता का व्यवहार करने लगता तो वे रौद्ररूप धारण करके उसे दण्ड देने को तैयार हो जाते थे।

सन् १८७३ में कलकत्ता में स्वामी जी अपने व्याख्यानों में कहा करते थे कि जब तक वेद न पढ़ाए जायें संस्कृत की शिक्षा से कोई लाभ नहीं। पुराणों की बुरी शिक्षा से लोग व्यभिचारी हो जाते हैं और जो विचारशील हैं वे धर्म से पतित होकर हानिकारक बन जाते हैं।

स्वामी जी कहते थे कि पत्थरों को पूजने से पण्डितों की बुद्धि पत्थर हो गई है। इस कारण से वे सत्य-सिद्धान्तों को समझने में असमर्थ हैं। मैं उनकी जड़पूजा छुड़वाकर उनकी बुद्धि को निर्मल करने का प्रयत्न कर रहा हूँ। वे यह भी कहते थे "मेरा काम लोगों के मनमन्दिरों से मूर्तियां निकलवाना है, ईंट-पत्थर के मन्दिरों को तोड़ना-फोड़ना नहीं है।

सन् १८७४ में मुम्बई में अनेक अंग्रेज कर्मचारी स्वामी जी से मिलने और उनके व्याख्यान सुनने आया करते थे और उनकी प्रशंसा करते थे। स्वामी जी अंग्रेजी राज्य की कतिपय विशेषताओं के कारण प्रशंसा भी किया करते थे। इसी कारण से बहुत से लोग उन्हें अंग्रेजों का गुप्तचर कह दिया करते थे। १८७४ में नासिक में स्वामी जी ने यह भी कहा कि भारत में सही अर्थों में अंग्रेज ही ब्राह्मण हैं।

सन् १८७८ में अजमेर में रायबहादुर श्यामसुन्दर लाल ने स्वामी जी से कहा कि आप मूर्तिपूजा पर इतना तीव्र आक्रमण क्यों करते हैं, उसे थोड़ा नम्र कर देने से भी तो काम चल सकता है। स्वामी जी ने उत्तर दिया- मूर्तिपूजा पर मृदु आक्रमण करने व उससे किसी प्रकार की सन्धि करने से हमारे सिद्धान्तों की भी वही दशा होगी जो अन्य सिद्धान्तों की हुई है और कुछ समय के बाद आर्य समाज पौराणिक होकर हिन्दुओं में मिल जाएगा।

सन् १८७६ में दानापुर में एक दिन एक सज्जन ने स्वामी जी से कहा कि आप इस्लाम के विरुद्ध न कहा करें। उस समय तो स्वामी जी ने कोई उत्तर न दिया। परन्तु सायंकाल को जो व्याख्यान दिया वह आदि से अन्त तक इस्लाम के सिद्धान्तों पर ही था जिसमें उनकी तीव्र समालोचना की। व्याख्यान का आरम्भ ही इन शब्दों से किया कि मुझे कहा गया है कि मुसलमानी मत का खण्डन मत करो, परन्तु मैं सत्य को छिपा नहीं सकता। जब मुसलमानों की चलती थी तब वे हम लोगों का तलवार से खण्डन करते थे। अब यह अन्धेर देखो कि मुझे उनका जिह्वा मात्र से खण्डन करने से मना करते हैं। मैं ऐसा अच्छा राज्य पाकर भला किसी की पोल खोलने से कभी रुक सकता हूँ।

एक दिन पण्ड्या मोहनलाल ने स्वामी जी से प्रश्न किया कि भारत का पूर्णहित और जातीय उन्नति कब होगी? स्वामी जी ने उत्तर दिया कि एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाए बिना ऐसा होना मुश्किल है।

वेदों के सम्बन्ध में महर्षि लिखते हैं- 'मैं वेदों में कोई बात युक्ति विरुद्ध वा दोष की नहीं देखता और उन्हीं पर मेरा मत है।' महर्षि का यह मत सभी ऋषि-मुनियों के मत के अनुकूल ही है। वैशेषिक दर्शन में महर्षि कणाद लिखते हैं-

बुद्धिपूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे।

अर्थात् वेद का प्रत्येक वाक्य समझदारी से बना है। महर्षि

मनु कहते हैं-

यस्तर्केणानुसंधत्ते स: धर्मं वेद नेतर: l

अर्थात् जो युक्ति से सिद्ध हो वही वेद का धर्म है, और कोई नहीं। महर्षि दयानन्द वेदों को ईश्वरकृत तथा सब सत्य विद्याओं का पुस्तक मानते थे। वे वेद पढ़ने का अधिकार स्त्री-पुरुष, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सबका मानते थे और वे मानते थे कि वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

महर्षि दयानन्द का स्वाध्याय बहुत विस्तृत था। ''भ्रान्ति निवारण'' पुस्तक में पण्डित महेशचन्द्र न्यायरत्न को उत्तर देते हुए वे लिखते हैं- ''मैं अपने निश्चय और परीक्षा के अनुसार ऋग्वेद से लेके पूर्व मीमांसा पर्यन्त अनुमान से तीन हजार ग्रन्थों के लगभग मानता हूँ।''

अंग्रेजी राज्य के सम्बन्ध में- २३ नवम्बर १८८० को थियोसफिकल सोसायटी की मैडम ब्लेवास्तिकी को लिखे पत्र में स्वामी दयानन्द भगवान को धन्यवाद देते हैं कि अंग्रेजी राज्य में मुसलमानों के अत्यचार से कुछ-कुछ छुटकारा मिला

है। ''मैं तथा अन्य सज्जन लोग पुस्तकें लिखने, उपदेश देने तथा धर्म के विषय में स्वतन्त्र हैं। इसका कारण इंग्लैण्ड की महारानी, पार्लियामेन्ट तथा भारत में राज्याधिकारी धार्मिक, विद्वान् और सुशील हैं। अगर ऐसा न होता तो स्वतन्त्रता से व्याख्यान देना, वेदमत प्रचारक पुस्तकें लिखना सम्भव न होता और आज तक मेरा शरीर भी बचना कठिन था। इसलिए इन सभी महानुभावों को हम धन्यवाद देते हैं।''

सत्यार्थप्रकाश के सम्बन्ध में प्रसिद्ध देशभक्त लाला हरदयाल एम.ए. के विचार- ''इस महान् ग्रन्थ के अध्ययन से मेरी विचारधारा बदल गई है। सोई हुई जाति के स्वाभिमान को जागृत करने वाला यह ग्रन्थ अद्वितीय है।''

वीर सावरकर की सत्यार्थप्रकाश पर टिप्पणी- ''हिन्दू जाति की ठण्डी रगों में गर्म खून का संचार करने वाला यह ग्रन्थ अमर रहे। सत्यार्थप्रकाश की विद्यमानता में कोई विधर्मी अपने मजहब की शेखी नहीं मार सकता।''

प्रसिद्ध कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने कहा था- ''हमारा सबसे अधिक उपकार महर्षि दयानन्द ने किया है।''

महान् कहानीकार उपन्यास सम्राट मुन्शी प्रेमचन्द की एक कहानी है 'आपका चित्र'। कहानी के नायक ने अपने कमरे में स्वामी दयानन्द का एक चित्र लटका रखा है। वह बता रहा हैं कि यह चित्र उसने क्यों लटका रखा है। ''मैं उसे केवल इस कारण से अपने कमरे में लटकाए हुए हूँ कि स्वामी जी के जीवन का उच्च और पवित्र आचरण सदा मेरी आँखों के सामने रहे। जिस घड़ी सांसारिक लोगों के व्यवहार से मेरा मन उब जाए, जिस समय प्रलोभनों के कारण पग डगमगाएँ अथवा प्रतिशोध की भावना मेरे मन में लहरें लेने लगें अथवा जीवन की कठिन राहें मेरे साहस व शौर्य की अग्नि को मन्द करने लगें, उस विकट बेला में उस पवित्र मोहिनी मूरत के दर्शनों से आकुल व्याकुल हृदय को शान्ति हो, दृढ़ता धीरज बने रहें, क्षमा व सहनशीलता के मार्ग पर पग चलते चलें तथा मैं अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि इस चित्र से मुझे लाभ पहुँचा है और एक बार नहीं, कई बार।''

- कृष्णचन्द्र गर्ग
८३१ सैक्टर- १०, पंचकूला, हरियाणा
दूरभाष- ०१७२-४०१०६७९

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़

शिक्षा पर भारी परीक्षा

शिक्षा मानव के लिए अत्यावश्यक है। शिक्षा के बिना मानव को पशु के समान कहा गया है। निःसन्देह मानव प्राणी और अन्य जानवरों में जैविक दृष्टि से कोई भेद नहीं है। शिक्षा ही वह महत्वपूर्ण तत्व है, जो मानव को अन्य प्राणियों से विशिष्ट बनाता है। जन्म के समय मानव बच्चा इतना निरीह होता है कि वह अपनी माँ के स्तन को भी अपने मुँह में नहीं ले सकता। माँ! उसे दूध पीना सिखाती है और यहीं से उसकी शिक्षा की शुरूआत होती है। कालान्तर में शिक्षा के विभिन्न स्तरों को पार करते हुए मानव प्रकृति पर विजय प्राप्त करने की बात करने लगता है। अन्य ग्रहों पर अधिकार प्राप्त करना चाहता है। यह सब कुछ शिक्षा के द्वारा ही संभव होता है।

शिक्षा पर बड़ी-बड़ी पुस्तकें लिखी जाती रहीं हैं। विश्व में अनेक पुस्तकालय शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकों से भरे पड़े हैं।

शिक्षा के महत्व पर अशिक्षित भी बहुत अच्छी बातें करता है किन्तु शिक्षा को वास्तविक जीवन में उतारने में कथनी-करनी का भेद प्रभावी हो जाता है। व्यावहारिक रूप से शिक्षा का अर्थ बड़ा ही सरल है। शिक्षा का अर्थ सीखना है। जब हम कुछ भी नया सीखते हैं, वह शिक्षा है। सीखने के स्थान, तरीके या स्रोत भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। कहीं से भी, किसी से भी, कहीं पर भी हम जो कुछ भी सीखते हैं, वह शिक्षा है। संसार के अधिकांश व्यक्ति न केवल अपने आपको बल्कि अपने बच्चों को भी अधिक से अधिक व श्रेष्ठ से श्रेष्ठ सिखाना चाहते हैं। यह सिखाना केवल विद्यालयों या कॉलेजों तक सीमित नहीं होता। देखने में आता है कि रास्ते चलते हुए अपरिचित व्यक्ति को भी हम सिखाने का प्रयास करने लग जाते हैं। कई बार अपरिचित व्यक्तियों से भी हमें इतनी महत्वपूर्ण सीख मिल जाती है कि वह हमारे जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन ले आती है। वास्तविकता यही है कि शिक्षा का महत्व सार्वभौमिक और सार्वकालिक है।

औपचारिक शिक्षा प्रणाली में योग्यता का आकलन परीक्षा के द्वारा किया जाने लगा है। विभिन्न परीक्षा प्रणालियों में विभिन्न प्रकार की मूल्यांकन की व्यवस्था है। परीक्षा ने शिक्षा के क्षेत्र में इतना अधिकार जमा लिया है कि परीक्षा के खौफ से बहुत बड़ी संख्या में विद्यार्थी आत्महत्या करके अपने जीवन को ही त्याग देते हैं। शिक्षा से वे यह नहीं सीख पाते कि शिक्षा जीवन के लिए है, न कि जीवन शिक्षा के लिए। जीवन को गुणवत्तापूर्ण व उपयोगी बनाने के लिए शिक्षा एक आधार होती है किन्तु संसार में स्वाभिमानपूर्ण जीवन से अधिक महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं है। जहाँ तनाव, अवसाद या आत्महत्या की बात आती है, वहाँ शिक्षा नदारद होती है। शिक्षा जीवन जीना सिखाती है, जीवन समाप्त करने को मजबूर करना शिक्षा का क्षेत्राधिकार नहीं है। अतः तनाव, अवसाद व आत्महत्या की ओर ले जाने वाली परीक्षा प्रणाली पर व औपचारिक शिक्षा प्रणाली या इसकी प्रक्रिया पर पुनर्विचार की आवश्यकता है।

वर्तमान में शिक्षा गौण होती जा रही है और प्रमुख स्थान परीक्षाएं लेती जा रहीं हैं। समस्या यहीं से पैदा होती है। हम शिक्षा का नाम लेकर परीक्षा पास करने पर जोर देते हैं। विद्यार्थी परीक्षा पास करने के लिए पढ़ता है, अध्यापक परीक्षा पास करवाने के लिए पढ़ाते हैं। अभिभावक परीक्षाओं में अधिक अंक लाने के लिए अपने पाल्यों को कोचिंग सेन्टरों में भेजते हैं। जब सब कुछ परीक्षा पास करने के लिए किया

जा रहा है तो शिक्षा कहाँ से प्राप्त होगी। हमें समझने की आवश्यकता है कि शिक्षा प्राप्त करने के लिए परीक्षा आवश्यक नहीं है, सीखना अपने आपमें महत्वपूर्ण है। सीखकर हमें प्रमाण-पत्र चाहिए, तभी परीक्षा की आवश्यकता पड़ती है। विश्व में अनेक ऐसे उदाहरण मिल जायेंगे, जिन्होंने कोई परीक्षा नहीं दी किन्तु उच्च स्तर की विद्वता प्राप्त की। शिक्षा प्राप्त करने के बाद परीक्षा केवल मूल्यांकन के लिए होती है, ताकि हम शिक्षा के आगे के स्तर की ओर अग्रसर हो सकें। दुर्भाग्य से हम शिक्षा को छोड़कर परीक्षा पर जोर देने लगे हैं। जबकि परीक्षा पर जोर देने की आवश्यकता ही नहीं है।

हमारे सामने समस्यायें इसलिये पैदा होती हैं कि हम प्राथमिकताओं का गलत निर्धारण कर लेते हैं। हमें समझना होगा और समझाना होगा कि परीक्षा नहीं सीखना महत्वपूर्ण है। परीक्षा तो एक मापन का यन्त्र है, जैसे- हम दूध पीना चाहते हैं किन्तु हम लीटर को पकड़ लेते हैं, जबकि लीटर नहीं दूध की पौष्टिकता महत्वपूर्ण है। लीटर पर जोर देने के कारण ही मिलावट सामने आती है। ठीक इसी प्रकार परीक्षा

पर जोर देने के कारण ही परीक्षाएँ तनाव का कारण बनती हैं। यही नहीं परीक्षाओं पर अधिक जोर देने के कारण ही अनुचित साधनों का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। स्थान-स्थान पर परीक्षा पास करने पर ही जोर दिया जाता है। परीक्षा पास कराने के लिए कोचिंग संस्थान खूब फल-फूल रहे हैं। परीक्षा पास करने पर जहाँ मिठाइयाँ बाँटी जाती हैं, वहीं परीक्षा में असफल रहने पर मुँह लटक जाते हैं। विद्यार्थी ही नहीं अभिभावक भी बेइज्जती का अनुभव करते हैं। ये परिस्थितियाँ परीक्षार्थी को तनाव, अवसाद और आत्महत्या की ओर ले जाती हैं। इसी तनाव, अवसाद या आत्महत्या की परिस्थितियों को कम करने के उद्देश्य से ही सही किन्तु अपने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी भी परीक्षाओं पर चर्चा का राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम का आयोजन कर देते हैं।

वास्तविकता तो यह है कि परीक्षा नहीं सीखना महत्वपूर्ण है। जब हम सीखने पर जोर देंगे, तो सब कुछ आसान हो जायेगा। सीखना आनन्ददायक हो जायेगा। हमें मालूम ही नहीं पड़ेगा कि कब परीक्षा हुई क्योंकि जब आप सीखने पर ध्यान केन्द्रित करेंगे तो परीक्षा तो एक खेल मात्र रह जायेगी। अतः परीक्षा पर चर्चा छोड़कर सीखने पर चर्चा कीजिये। देश के लिये सीखना, समाज के लिये सीखना, परिवार के लिये सीखना, जीवन के लिये सीखना सबसे आगे बढ़कर आनन्द के लिये सीखना, जब सीखना ही महत्वपूर्ण होगा तो परीक्षा तनाव नहीं आनन्द देने लगेगी जिसके लिये किसी तैयारी की आवश्यकता ही नहीं होगी। वास्तविकता यही है कि हमें परीक्षा के लिए किसी तैयारी की आवश्यकता नहीं है। हाँ! अपने आपको हर क्षण सीखने के लिए तैयार रखने की आवश्यकता है क्योंकि सीखना ही हमें मानवता के विकास के पथ पर ले जाता है। सीखते और सिखाते समय हमें सदैव सावधान रहना होगा कि शिक्षा पर परीक्षा भारी न पड़ जाय।

- डॉ. सन्तोष गौड़ राष्ट्रप्रेमी
जवाहर नवोदय विद्यालय, केन्द्रीकोणा,
साउथ वैस्ट गारो हिल्स-७९४१०६ (मेघालय)

विश्व भर से सहस्रों की संख्या में आने वाले दर्शकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

Very nice, I agree with everything except something.
-Ashish Kumar

It is very nice experience. It is good that a guide is appointed here to describe each and every thing.
-Sanjeev Rehan

Visiting aryasamaj's historic place is a never forgettable experience. It is so knowledgeable.
-Gurimi Changani

हम बचपन से जिन प्रश्नों के उत्तर ढूढ़ते थे, बड़ों से पूछते थे, लेकिन समाधान वाले उत्तर हमें मिलते नहीं थे। वे सभी उत्तर हमें यहाँ आकर मिले, इसलिए हम आपके आभारी हैं।
- रजनी उमेश सालवी

मैं विनोद पाठक बिहार से आया हूँ। यहाँ पर आने के बाद मैंने महसूस किया कि हमारे धर्मों के जो प्रणेता रहे हैं वे वास्तव में आर्यसमाजी ही थे। इनके जीवन चरित्र को हमें प्रकाश में लाना चाहिए और धर्म के अनुरागी महापुरुषों के आदर्शों पर चलने की प्रेरणा लेनी चाहिए।
- विनोद पाठक

वेद विवेचना

वैदिक वाङ्मय में 'वेद' शब्द दो प्रकार का मिलता है। एक आद्युदात्त और दूसरा अंतोदात्त। इनमें से प्रथम जो आद्युदात्त है, वह ज्ञान का पर्याय है! यह 'विद् ज्ञाने' धातु से निष्पादित है। आचार्य पाणिनी ने इसे वृषादि गण में पढ़ा है। दूसरा वेद शब्द, जो अंतोदात्त है, वह दर्भमुष्टि से निर्मित एक यज्ञीय उपकरण का पारिभाषिक नाम है।

आद्युदात्त 'वेद' शब्द ऋक्, यजु, साम और अथर्व संज्ञक मंत्र संहिताओं के साथ संयुक्त होकर मंत्र संहिता मात्र के लिए लोक में विख्यात है। केवल 'वेद' कहने मात्र से इन्हीं का बोध होता है। तात्पर्य यह है कि मंत्र संहिताओं की ही वेद संज्ञा है। कालान्तर में यही वेद शब्द अनेक ज्ञान के आधारभूत ग्रन्थों के साथ जुड़कर आयुर्वेद, धनुर्वेद, गंधर्ववेद, नाट्यवेद इत्यादि के रूप में दृष्टिगोचर होता है। परन्तु उक्त सभी ग्रन्थों का मूल वेद संहिताएँ ही प्रसिद्ध हैं। अतः इन्हें उपवेद कहा जाता है और इनकी प्रामाणिकता वेदों के ही ऊपर आधारित है।

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद ये चार मंत्र संहिताएँ ही वेद हैं- यह मान्यता सर्वसम्मत रही है। सृष्टि के आदि से ही सभी ऋषि, महर्षि व विद्वान् उक्त मंत्र राशि को अपौरुषेय, नित्य और स्वतः प्रमाण मानते और कहते आए हैं। परन्तु इस 'अपौरुषेय' शब्द को लेकर मतभेद होने से वैदिकों मे दो पक्ष हो गए। एक पक्ष का मत है कि वेद का कर्त्ता कोई भी नहीं है, वे अनादि और नित्य हैं। इस पक्ष के लोग ईश्वर को सृष्टिकर्त्ता नहीं मानते, जगत् को अनादि, अनन्त मानते हैं, सृष्टि व प्रलय को भी नहीं मानते। दूसरे पक्ष के मत में ईश्वर सृष्टि-प्रलय का कर्त्ता और मंत्र संहिता रूप वेदों का प्रकाशक है। प्रत्येक सृष्टि की आदि में वह मनुष्यों को वेद का ज्ञान देता है। ईश्वर नित्य है अतः उसका ज्ञान वेद भी नित्य है, इसलिए वेद स्वतः प्रमाण है। जगत् में उत्पन्न शरीरधारी कोई पुरुष वेदों का कर्त्ता नहीं है, इसलिए वेद अपौरुषेय कहलाते हैं-आदि।

परन्तु दोनों ही पक्ष इस बात में एकमत हैं कि मंत्र राशि ही वेद हैं, वे अपौरुषेय, नित्य और स्वतःप्रमाण हैं।

ईश्वरवादी वैदिकों के अनुसार सृष्टि की आदि मे जो मनुष्य सर्वप्रथम होते हैं, वे बिना माता-पिता के संयोग के पृथ्वी के गर्भ में से उत्पन्न होते हैं। इसे अमैथुनी सृष्टि कहते हैं। ये मनुष्य शुद्ध, पवित्र, सतोगुण-प्रधान, निर्मल बुद्धि युक्त, राग द्वेष रहित, साक्षातकृद्धर्मा, समाहितचित्त योगी होते हैं। इन्हीं में से चार मुख्य ऋषियों को परमेश्वर ने मंत्र प्रदर्शित किए। अग्नि ऋषि को ऋक्, वायु ऋषि को यजुः, आदित्य ऋषि को साम और अंगिरा ऋषि को अथर्व मंत्र राशि सुनाई पड़ी, जिसे सुनकर वे भी बोलने लगे। मंत्र राशि सुनी जाने के ही कारण श्रुति कहलाई। उक्त ऋषियों ने ध्यान योग से बुद्धि में मंत्रराशि को देखा, इसीलिए वे मंत्रदृष्टा कहे जाते हैं। ईश्वरवादियों के अनुसार ज्ञान और भाषा दैवी प्रेरणा से ही मनुष्य को प्राप्त होते हैं, मनुष्य के वश की बात नहीं कि वह इन्हें बना सके।

इस उक्त मान्यता पर आक्षेप करने वाला तीसरा पक्ष भी है, जो वेदों को ईश्वर की देन न मानकर ऋषियों की देन मानता है। इसके अनुसार ऋषियों ने ही मंत्र बनाए हैं, भाषा भी उन्होंने ही बनाई है और ज्ञान भी उन्होंने ही दिया है, ईश्वर ने नहीं। अतः ऋषि लोग मंत्रदृष्टा नहीं, मंत्रकर्त्ता हैं। आज भी जो वेद की शाखाएँ हैं, वे किसी न किसी मनुष्य के नाम से प्रचलित हैं। यथा- शाकल, शौनक, तैत्तिर, पैप्पलाद, माध्यन्दिन, कौथुम आदि। इसके साथ ही वेद मंत्रों में अनित्य पदार्थों, पुरुषों, राजाओं और ऋषियों के नाम मिलते हैं। यथा- गंगा, यमुना, सुदास, देवापि, शांतनु, वशिष्ठ, भरद्वाज, जमदग्नि आदि। इससे विदित होता है कि इनके समय में या इनके पश्चात् ही वेदमंत्र बनाए गए अतः वे अपौरुषेय और नित्य नहीं हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती भी ईश्वरवादी वैदिकों में से ही हैं। वे भी वेदों को ईश्वरीय ज्ञान, अपौरुषेय (अमनुष्यकृत) नित्य और स्वतः प्रमाण मानते हैं और मंत्र संहिताओं को ही मूल

वेद स्वीकारते हैं, अन्य ब्राह्मणों, शाखाओं को नहीं। उनके अनुसार ब्राह्मण, शाखादि सब मनुष्यकृत हैं अतः वे निर्भ्रान्त और स्वतःप्रमाण के योग्य नहीं हो सकते। वे अनित्य हैं और वेदानुकूल होने पर ही उनका प्रमाण माना जाना चाहिए। उनका कहना है कि ऋषि या तो मंत्रदृष्टा होते हैं, या फिर मन्त्रार्थदृष्टा। कोई भी ऋषि मंत्रकर्त्ता नहीं है।

स्वामी दयानन्द जी की यह मान्यता उनकी स्वकल्पित नहीं है, अपितु ब्रह्मा से लेकर जैमिनी मुनि पर्यन्त सभी वैदिकों की यही मान्यता रही है। इसपर होने वाले आक्षेप भी नए नहीं हैं, बहुत प्राचीन हैं। वैदिक विद्वानों ने सभी आक्षेपों के उत्तर दे दिये हैं। अब तक ऐसा एक भी आक्षेप शेष नहीं है जिसका उत्तर वैदिक विद्वानों द्वारा नहीं दिया गया है। वैदिक वाङ्मय के अध्ययन से यह सब जाना जा सकता है।

उन्हीं पुराने आक्षेपों, और आरोपों और प्रहारों को एकत्र करके वर्तमान में कुछेक लोगों ने पुनः परोसना प्रारम्भ कर दिया है और ऐसा समझते हैं कि हमने बहुत बड़ा अन्वेषण और अनुसंधान कर डाला है, स्वामी दयानन्द को झूठा सिद्ध करने की धुन में सारी आर्ष परम्परा को ही मिथ्यावादी कहने का दुस्साहस दिखाया है। परन्तु ये स्वयं नालायक, अर्थात् अयोग्य हैं। इनकी नीयत ठीक नहीं है, यह इनके लेखन से स्पष्ट विदित हो रहा है।

वेदों के ऊपर आक्षेप और प्रहार करने का कार्य नया नहीं, अति प्राचीन है।

नास्तिक चारवाक, वाममार्गी, आभाणक, बौद्ध, जैन, विदेशी और स्वदेशी मत-मजहब, वेदों पर कार्य करने वाले अनेक विदेशी तथाकथित विद्वान् आदि लोगों ने अपनी पूरी शक्ति लगा कर वेदों और वैदिक मान्यताओं पर आक्षेप और प्रहार किए हैं। किसी ने उन्हें भाण्ड, धूर्त और निशाचरकृत कहा तो किसी ने गड़रियों के गीत कहा। किसी ने आत्मा को नहीं माना, किसी ने परमात्मा को नहीं माना। कोई लोक को नहीं मानता तो कोई परलोक को नहीं मानता इत्यादि। परन्तु इन सबके उत्तर वैदिक विद्वानों द्वारा तर्क, युक्ति और प्रमाण पुरस्सर दिये जा चुके हैं। वैदिक षड्दर्शनों के अध्ययन से यह सब विदित हो जाता है।

जहाँ तक वेदों की अपौरुषेयता और नित्यता पर आक्षेप का प्रश्न है सो इसे जैमिनी मुनि ने अपने पूर्व मीमांसा ग्रन्थ के प्रथमाध्याय में ही सभी पूर्व पक्षियों का समाधान करते हुए सिद्ध किया है कि शब्द नित्य है, शब्द और अर्थ का सम्बन्ध नित्य है, वेद भी अपौरुषेय और नित्य हैं। उत्तर मीमांसा अर्थात् वेदान्त दर्शन के प्रारम्भ में ही महर्षि व्यास ने ब्रह्म अर्थात् परमेश्वर को शास्त्र की योनि कहकर वेदों को ईश्वर प्रदत्त अपौरुषेय और नित्य सिद्ध किया है।

स्वामी दयानन्द के इस कथन पर कि 'केवल मंत्र संहिता ही अपौरुषेय, नित्य और स्वतःप्रमाण हैं', पं० सत्यव्रत सामश्रमी ने अपने ऐतरेयालोचन ग्रंथ के पृष्ठ १२७ पर लिखा है कि 'ऐसी कौन-सी मंत्र संहिता है, जो शाखा नाम से रहित है जिसे महात्मा दयानन्द के अनुसार मूल वेद माना जावे- यह हमारी समझ में नहीं आ रहा।'

तात्पर्य यह है कि वर्तमान में सभी वेद संहिताएँ किसी न किसी शाखा के ही नाम से प्रसिद्ध हैं। अतः मूल वेद संहिता कौन-सी है- उसको कैसे जाना जाय? हमारा निवेदन है कि स्वामी दयानन्द ने इस जटिल समस्या का भी समाधान किया है। उन्होंने जिन शाखा नाम से व्यवहृत संहिताओं को मूल वेद स्वीकार किया है, उनमें ऋग्वेद की शाकल, यजुर्वेद की माध्यन्दिन, सामवेद की कौथुम संहिता है। अथर्ववेद की उस समय शौनक संहिता ही उपलब्ध थी अतः उसे ही ग्रहण कर लिया। इसका कारण यह था की शाकल्य ने अपनी संहिता के मंत्रों का केवल पद पाठ ही किया है, मंत्रों में कोई घालमेल नहीं किया। अतः स्वामी दयानन्द ने उसका सम्पूर्ण मंत्रभाग स्वीकार कर ऋग्वेद संहिता बना दिया। यजुर्वेद की सभी प्राप्य शाखाओं में से माध्यन्दिन संहिता ही ऐसी थी जिसमें मंत्रभाग पूर्णतः सुरक्षित रखा गया, ब्राह्मण भाग का सम्मिश्रण नहीं था। माध्यन्दिन ने कर्मकाण्डीय सुविधा के लिए अनेक स्थानों पर कुछ प्रतीकें जोड़ी थीं। बस इसीलिए वह माध्यन्दिन संहिता कहलाई। स्वामी दयानन्द ने उसकी प्रतीकें स्वीकार नहीं कीं। केवल मंत्र लेकर मूल यजुर्वेद प्राप्त कर लिया।

सामवेद की कौथुम और राणायनीय दो शाखाएँ प्राप्त थीं। दोनों के मंत्रों में कोई भेद नहीं, केवल गायन के ढंग में अन्तर था। अतः उन्होंने कौथुम शाखा को ग्रहण करना उचित समझा। इस पर आगे भी अन्वेषण कार्य होना चाहिए।

जहाँ तक वेदों में आए अनित्य पदार्थों, स्थानों और व्यक्तियों के नामों या अनित्य इतिहास होने के आक्षेप की बात है, सो इस विषय पर स्वामी दयानन्द ने 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' में पर्याप्त प्रकाश डाला है।

अनेक वैदिक विद्वानों ने भी इस विषय पर अनेक बड़े ग्रन्थ लिखे हैं। इनमें पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, युधिष्ठिर मीमांसक, शिवशंकर शर्मा, आचार्य वैद्यनाथ, डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। सबने सप्रमाण सिद्ध किया है की वेद में अनित्य इतिहास नहीं है। पूर्व मीमांसा प्रथमाध्याय में स्वयं जैमिनी मुनि ने-

१. वेदाँश्चैके सन्निकर्षं पुरुषाख्याः।। १-१-२७

२. अनित्यदर्शनाच्च।। २८

इन दो सूत्रों से पूर्वपक्ष रखकर

१. उक्तं तु शब्दपूर्वत्वं।। २९

२. आख्या प्रवचनात्।। ३०

३. परं तु श्रुतिसामान्यमात्रम्।। ३१

इन तीन सूत्रों द्वारा समाधान प्रस्तुत किया है, जिसे वहीं देखना चाहिए।

भाषा और ज्ञान को मनुष्यकृत कहने वालों से हमारा निवेदन है कि आदि मानव जो सर्वप्रथम उत्पन्न हुए उनमें यदि बोलने का सामर्थ्य था तो शब्द भी अवश्य होंगे। यदि शब्द नहीं थे तो वे गूंगे होंगे। इसी प्रकार जब उनके कान थे तो ध्वनियाँ भी होंगी, जिनको वे सुनते थे। यदि नहीं सुनते थे तो बहरे होंगे। शब्द दो ही प्रकार के होते हैं, एक ध्वन्यात्मक, दूसरे वर्णात्मक। बोलना और समझना वाक् शक्ति है, आदि मानव उससे युक्त होना चाहिए। समझना और विचार करना- यह ज्ञान का द्योतक है और ज्ञान भाषा के बिना नहीं होता। अतः बिना ज्ञान के भाषा और बिना भाषा के ज्ञान नहीं रह सकते। अतः यह मानना ही पड़ेगा कि ज्ञान और भाषा आदि मानव के साथ ही आए थे। ये उन्हें दैवी प्रेरणा या ईश्वरीय व्यवस्था से ही प्राप्त हुए थे। यही वेद हैं और अपौरुषेय हैं। भाषाओं का जन्म इसी आदि भाषा में ही होता है। ध्यान रहे, संसार की समस्त भाषाएँ भाषा विकास का परिणाम नहीं हैं, ह्रास का परिणाम हैं। भाषा संकोच और अपभ्रंश होकर बढ़ती जाती है, कई बार तो मूल शब्द लुप्त हो जाता है और उसके अनेक अपभ्रंश प्रचलित रहते हैं। समस्त भाषाओं का यही हाल है। वे किसी एक मूल भाषा से ही अपभ्रंश होकर बनी हैं। वही आदि भाषा वेद वाणी है। इसीलिए सभी ऋषि मुनियों की सर्व सम्मत मान्यता रही है कि वेद अपौरुषेय, स्वतःप्रमाण ईश्वरप्रदत्त ज्ञान है।

उक्त मंत्र संहिताओं की वेद संज्ञा होने पर तो किसी को आपत्ति नहीं है। सर्वसम्मत है। परन्तु कुछ लोग ब्राह्मण ग्रन्थों को भी वेद मानते और उनके भी स्वतः प्रमाण होने का आग्रह करते हैं। प्रमाण के रूप में वे एक सूत्र उपस्थित करते हैं- **'मंत्र ब्रह्मणयोर्वेदनामधेयम'।**

ये लोग इसे कात्यायनकृत श्रौत सूत्र कहते हैं, परन्तु यह कात्यायनीय श्रौत सूत्र में नहीं मिलता। हाँ, कात्यायनकृत कहे जाने वाले प्रतिज्ञा परिशिष्ट में पाया जाता है, किन्तु यह प्रतिज्ञा परिशिष्ट श्रौत सूत्र न होकर प्रतिशाख्य से सम्बद्ध है। अतः विद्वान् इसे कात्यायनकृत नहीं मानते। एक और महत्त्वपूर्ण विचारणीय बात यह है कि यह सूत्र केवल कृष्णयजुर्वेदीय श्रौत सूत्रों में ग्रहण किया गया है। यथा आपस्तम्ब, सात्यषाढ, बौधायन आदि श्रौत सूत्रों में उपलब्ध है। परन्तु उनके भी परिभाषा प्रकरण में पठित है। शुक्ल यजुर्वेद, ऋग्वेद और सामवेद से सम्बन्धित किन्हीं श्रौत सूत्रों में उपलब्ध नहीं होता। इससे विदित होता है कि यह इन्हीं कृष्णयजुर्वेदियों का ही बनाया हुआ है। परन्तु अनेक आचार्यों को यह स्वीकार नहीं था, ऐसे प्रमाण भी उपलब्ध हैं। इसी सूत्र पर अपनी आपस्तम्ब श्रौतसूत्र की व्याख्या करने वाले हरदत्त और उससे भी पूर्व धूर्तस्वामी ने टिप्पणी दी है कि, **'कैश्चिन्मंत्राणामेव वेदत्वमाख्यातम्'॥** अर्थात् किन्हीं आचार्यों ने केवल मंत्रों का ही वेदत्व कहा है। इससे सिद्ध है कि प्राचीन आचार्य केवल मंत्रों की ही वेद संज्ञा स्वीकार करते थे और इस सूत्र रचना के पश्चात् भी उन्होंने इस परिभाषा को अंगीकार नहीं किया था। शुक्ल यजुर्वेदीयों आदि के यहाँ मंत्रराशि पृथक् है और ब्राह्मण पृथक् है, अतः इनके आचार्यों को इस ऐसे सूत्र की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। उन्हें यह सन्देह ही न था कि कौन भाग मंत्र है और कौनसा भाग ब्राह्मण है।

परन्तु कृष्ण यजुर्वेदियों ने अपनी संहिताओं, शाखाओं में मंत्र और ब्राह्मण का घालमेल कर रखा है, इसीलिए उन्हें ऐसे सूत्र की आवश्यकता हुई। ध्यान देने की बात है कि उक्त सूत्र जहाँ भी है, परिभाषा प्रकरण में ही पठित है। पारिभाषिक संज्ञाओं की रचना तभी की जाती है जब वे लोक में प्रसिद्ध न हों अथवा अन्य शास्त्रों में अन्य अर्थों में प्रसिद्ध हों। जैसे कि पाणिनि मुनि रचित गुण, वृद्धि आदि संज्ञाएँ और योग में प्रयुक्त संयम आदि। परन्तु ये संज्ञाएँ उन्हीं ग्रन्थों में प्रमाण मानी जाती हैं, जिनके लिए बनाई गयी होती हैं। अतः मंत्र और ब्राह्मण की वेद संज्ञा भी कृष्ण यजुर्वेदियों के याज्ञिक कर्मकाण्ड तक ही सीमित रहेगी, सर्वत्र ग्रहीत नहीं होगी। जिनके श्रौत सूत्रों में पठित है, वहीं मान्य होगी, सर्वत्र नहीं।

जहाँ तक ब्राह्मण भाग की प्रामाणिकता और अपौरुषेयता का प्रश्न है, सो वह अपौरुषेय तो है ही नहीं, क्योंकि वे तो कर्मकाण्ड के आचार्यों द्वारा किए गए मंत्र विनियोगों की व्याख्या और याज्ञिक प्रक्रिया के विधिप्रदर्शन हैं। अतः पौरुषेय हैं। साथ ही इनमें समय-समय पर विनियोजित मंत्रों और प्रक्रियाओं में फेरफार और उलट-पलट भी किया जाता रहा है और इनमें अनेक अवांछित और अनुचित प्रक्षेप भी घुसेड़ दिये गए हैं। अतः वे वेदों की भाँति प्रामाणिक भी नहीं हैं।

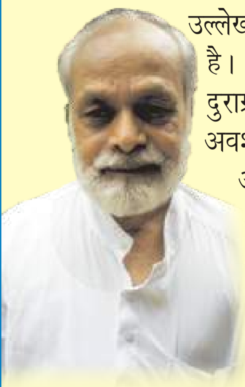

ब्राह्मण ग्रन्थों में विभिन्न समयों में हुए राजाओं, ऋषियों, आचार्यों तथा अन्य मनुष्यों के जीवन में घटित घटनाओं का उल्लेख मिलता है अर्थात् अनित्य इतिहास विद्यमान है। इसलिए उनकी स्वतःप्रामाणिकता मानना दुराग्रह मात्र ही है। हाँ, उनके वेदानुकूल भाग अवश्य प्रमाण योग्य होंगे। छल और वितण्डा का आश्रय लेकर सत्य का हनन या उसपर प्रहार करना सज्जन पुरुषों का कार्य नहीं हो सकता।

सा मा सत्योक्तिरू: परिपातु विश्वत:।।

- आचार्य वेदप्रिय शास्त्री
महर्षि दयानन्द साधु आश्रम, सीता वाड़ी
पो.- केलवाड़ा, जिला-बारां (राज.)

फार्म.IV

समाचार पत्र के स्वामित्व और अन्य विशिष्टियों के बारे में विवरण जो प्रत्येक वर्ष फरवरी के अंतिम दिन के पश्चात् प्रथम अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

१. प्रकाशन का स्थानः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१
२. प्रकाशन की नियत अवधिः–मासिक
३. मुद्रक का नामः–अशोक कुमार आर्य राष्ट्रीयताः–भारतीय
पताः–नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१
४. प्रकाशक का नामः–अशोक कुमार आर्य राष्ट्रीयताः–भारतीय
पताः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१
५. सम्पादक का नामः–अशोक कुमार आर्य राष्ट्रीयताः–भारतीय
पताः–नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१
६. उन व्यक्तियों के, जो समाचार पत्र के स्वामी हैं और उन भागीदारों या शेयरधारकों के, जो कुल पूँजी के 1 प्रतिशत से अधिक अंश के धारक हैं, नाम और पते।
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल
गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

मैं अशोक कुमार आर्य घोषणा करता हूँ कि ऊपर दी गई विशिष्टियाँ मेरे सर्वोत्तम ज्ञान और विश्वास के अनुसार सत्य हैं।

तारीखः– ०७.०३.२०१९ प्रकाशक के हस्ताक्षर

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्यांमार) स्मृति पुरस्कार

“सत्यार्थ-भूषण” पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
“सत्यार्थ सौरभ” के सदस्य बनें

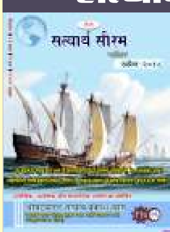

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

ईश्वर के अस्तित्व की वैज्ञानिकता- ८

Eternal Universe

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

'दर्शन व वैदिक विज्ञान (Philosophy and Vaidic Science)'

जब न्यूटन ने सेव के फल को वृक्ष से नीचे गिरते देखा था, उस समय उसके मन में इस ऊहा व तर्क की उत्पत्ति हुई कि सेव नीचे ही क्यों गिरा? उनके इसी विचार से गुरुत्वाकर्षण की खोज और एतदर्थ किये प्रयोग, परीक्षण व प्रयोगों की नींव रखी गयी। सेव गिरते अनेक लोग देखते हैं वा उस समय भी देखते थे परन्तु यह विचार न्यूटन के मस्तिष्क में ही आया, क्योंकि वे तर्क व ऊहा से सम्पन्न व्यक्ति थे। दर्शन को आंग्ल भाषा में Philosophy कहा जाता है, जिसकी परिभाषा करते हुए Chambers Dictionary में लिखा है-

"In pursuit of wisdom and knowledge, investigation contemplation of the nature of being knowledge of the causes and laws of all things. The principles underlying any sphere of knowledge, reasoning."_

Oxford Advanced Learners dictionary में इसे इस प्रकार परिभाषित किया है -

Search for knowledge and understanding of the nature and meaning of the Universe and human life.

आज सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में विद्यमान विभिन्न वस्तुओं, उनके कारण तथा कार्य करने के सिद्धान्तों आदि को तर्क व ऊहा के आधार पर जानने का प्रयत्न करना ही दर्शन कहलाता है। इससे स्पष्ट होता है कि विज्ञान व दर्शन दोनों का उद्देश्य ब्रह्माण्ड को जानने का प्रयास करना है। दोनों प्रक्रियाओं में कुछ भेद अवश्य है परन्तु दोनों का उद्देश्य समान है। विज्ञान का क्षेत्र मानव तकनीक के सामर्थ्य तक सीमित है और दर्शन का क्षेत्र चिन्तन, मनन, ऊहा की सीमाओं तक फैला है। कहीं विज्ञान प्रेक्षणादि कर्मों की विद्यमानता में भी मूल कारण वा नियमादि विषयों में भ्रमित हो सकता है, तो कहीं दर्शन भी दार्शनिकों (विशेषकर परम सिद्ध योगियों के अतिरिक्त) की कल्पनाओं के वेग में बहकर भ्रान्त हो सकता है। हमें दोनों ही विधाओं का विवेक सम्मत उपयोग करने का प्रयत्न करना चाहिये। अब हम विज्ञान व दर्शन की सीमा और समन्वय को दर्शाते हुए सृष्टि के एक नियम पर विचार करते हैं। जब हम इस बात पर विचार करते हैं कि एक धनावेशित वस्तु दूसरी ऋणावेशित वस्तु को क्यों आकर्षित करती है? तब इस ज्ञान की प्रक्रिया में सर्वप्रथम हमें यह अनुभव होता है कि विपरीत आवेश वाली कोई भी वस्तु एक-दूसरे को आकर्षित करती है। यहाँ आकर्षण बल है, तो उसका कारण भी होगा, यह विचार करना दर्शन का क्षेत्र है। कोई दो वस्तुएँ परस्पर निकट आ रही हैं, तब उनके मध्य कोई आकर्षण बल कार्य कर रहा होगा, यह जानना भी दर्शन का क्षेत्र है। अब उन आकर्षित हो रही वस्तुओं पर विपरीत वैद्युत आवेश है, यह बताना विज्ञान का कार्य है। यह आवेश कैसे काम करता है? यह बताना भी विज्ञान का कार्य है। वर्तमान विज्ञान ने जाना कि जब दो विपरीत आवेश वाले कण निकट आते हैं, तब उनके मध्य Virtual Photons उत्पन्न और संचरित होने लगते हैं। ये Particles (Photon) ही आकर्षण बल का कारण बनते हैं। ये Particles वर्तमान विज्ञान के मत में उन दोनों कणों के मध्य विद्यमान Space को संकुचित करके उन कणों को परस्पर निकट लाने का कार्य करते हैं। इस प्रक्रिया को जानना विज्ञान का काम है। कदाचित् वर्तमान विज्ञान की सीमा यहाँ समाप्त हो जाती है। इसके आगे दर्शन वा वैदिक विज्ञान की सीमा प्रारम्भ होती है। क्रमशः......

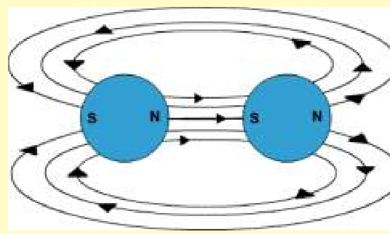

- आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक (वैदिक वैज्ञानिक)

('वेदविज्ञान-अलोकः' से उद्धृत)

खत्म होता आरक्षण का उद्देश्य

दस प्रतिशत आर्थिक आरक्षण की घोषणा पर विविध दलों के नेताओं के बयानों से साफ झलकता है कि अब आरक्षण के उद्देश्य पर कोई राष्ट्रीय सहमति नहीं रह गई है। हरेक नेता, पार्टी और समूह अपनी-अपनी तरह से उसका अर्थ करने लगे हैं। सत्तर साल पहले जब आरक्षण का प्रावधान अनुसूचित जातियों-जनजातियों के लिए किया गया था तब न केवल आरक्षण का उद्देश्य स्पष्ट था, बल्कि उसकी अवधि भी। डॉ. अंबेडकर ने अनुसूचित जातियों-जनजातियों के लिए आरक्षण की व्यवस्था केवल दस वर्ष के लिए की थी।

किसी को स्थाई रूप से विशेषाधिकार देना और देश के प्रतिभावानों के बीच भेदभाव करना उन का आशय नहीं था। तब किसी भी समूह को स्थाई रूप से आरक्षण देने की बात किसी के सपने में भी नहीं थी, लेकिन सात दशक बीत जाने के बाद न केवल आरक्षण जारी है, बल्कि नए-नए समूहों और रूपों में बढ़ता जा रहा है। अब तक के आरक्षण के परिणामों का कोई विधिवत अध्ययन, सर्वेक्षण आज तक किसी स्तर पर नहीं किया गया। क्या इसी से स्पष्ट नहीं कि आरक्षण के मूल उद्देश्य भुलाए जा चुके हैं? इस पर हमारे नेताओं को कभी राष्ट्रीय हित में विचार करना चाहिए। वे बखूबी जानते हैं कि अब आरक्षण एक ऐसी नीति बन गया है जिसके लक्ष्य पाए ही नहीं जा सकते।

एक बड़े नेता तो 'कला और संस्कृति' में भी आरक्षण की चाह व्यक्त कर चुके हैं। कौन जाने, आगे खेल-कूद में भी आरक्षण की माँग होने लगे। कल्पना करें कि तब कैसे खिलाड़ी, संगीतकार और अभिनेता आदि बनेंगे? वस्तुतः अभी वही हाल अनेक प्रशासनिक, शैक्षिक स्थानों का हो रहा है। यह दिखाई नहीं देता तो इसलिए क्योंकि राजनीतिक वर्ग ने वास्तविक काम और गुणवत्ता की चिन्ता ही छोड़ दी है। उसका सारा ध्यान और चिन्ता केवल दलीय प्रतिस्पर्धा और सत्ता-दखल पर रहता है। नए-नए आरक्षणों की माँग और प्रस्ताव उसी के लिए होते हैं। इस सच्चाई से नजर चुराना देश की हानि करना है।

निःसंदेह किसी भी तरह का आरक्षण किसी अन्य को वंचित करता है। न तो सामान्य बुद्धि और न ही कोई न्याय-दर्शन कहता है कि किसी को इसलिए वंचित करें, क्योंकि 'सदियों

पहले' उनके पूर्वजों ने दूसरों को 'वंचित किया होगा।' यह भी ध्यान रहे कि इस मान्यता का परीक्षण नहीं किया जाता। आज आरक्षण राजनीतिक कुश्ती का हथियार बन चुका है। तमिलनाडु इसका साफ उदाहरण है, लेकिन अब तो केन्द्र में भी वही हाल है। इसीलिए जब कभी न्यायपालिका ने आरक्षण को कुछ सुधारने का निर्णय किया तो संविधान संशोधन करके उसे पलट दिया गया। अब तक कम से कम सात बार ऐसे संशोधन हो चुके हैं, लेकिन प्राथमिक शिक्षा की

गुणवत्ता की गारण्टी करने के लिए कोई विधेयक एक बार भी नहीं आया। न ही सभी भारतीयों को अपनी-अपनी भाषा में भी बड़े अंग्रेजी स्कूलों की तरह अच्छे शिक्षण-प्रशिक्षण मिलने के लिए कुछ सोचा गया। इसी से स्पष्ट है कि सबके लिए 'समान अवसर' बनाना या 'भेदभाव खत्म करना' नेताओं की चिन्ता ही नहीं रहा।

आरक्षण ने एक जड़ मानसिकता बनाई है, जो नया चिन्तन पनपने नहीं देती। फलतः जैसे ही कोई आरक्षण की आलोचना करता है उसे तरह-तरह के लांछनों से बेध दिया जाता है। जो भी जाति-मजहब भेदों से ऊपर उठकर राष्ट्रीय, सामाजिक विमर्श और नीति-निर्माण की बात करता है उसे जातिवादी और संप्रदायवादी बता दिया जाता है। यह सोवियत कम्युनिस्ट शैली की बन्द, प्रचारात्मक मानिसकता है जो यहाँ प्रभावशाली बन गई है।

विचित्र यह है कि जिन सामाजिक समूहों का विचार-तंत्र जाति जैसी चीज मानता भी नहीं जैसे ईसाइयत और इस्लाम, उन्हें भी जातिगत आरक्षण का लाभ मिल रहा है। अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व अध्यक्ष तरलोचन सिंह के अनुसार मुसलमानों में ५८ जातियों और १४ जनजातियों को आरक्षण का लाभ दिया जा रहा है। आखिर यह कौन सी तुक है कि एक ओर हिन्दू धर्म-समाज को 'जाति' के लिए लांछित किया जाए और दूसरी ओर 'जाति मुक्त' समूहों को भी जातिगत आरक्षण दिया जाए? निःसन्देह यह दुर्भाग्यपूर्ण परिणति अंबेडकर की कल्पना नहीं थी। भारत में राजकीय तंत्र की भूमिका और आकार तो बेहद बढ़ते गए, किन्तु पदधारियों की योग्यता की कोई परवाह न रही। यदि महत्वपूर्ण स्थानों पर आधे लोग योग्यता के बजाय अन्य कारणों से नियुक्त हो रहे हैं तो यह सम्पूर्ण राज्यतंत्र को बेबस करेगा ही। आरक्षण का इतिहास दिखाता है कि अपवाद मानकर शुरू की गई चीज नियम को ही बर्बाद कर चुकी है। अब सारे आरक्षण को समय-बद्ध रूप से समाप्त करके दुर्बलों की सहायता के वैकल्पिक उपाय करना जरूरी है। ताकि दुर्बल भी योग्य बनें। न कि योग्यता का ही स्तर गिराकर पूरे समाज की हानि की जाती रहे। दुर्बल समूहों को योग्य बनाने के लिए सुविधाएँ देनी चाहिए। कोई कुपोषण ग्रस्त है तो उसे विशेष भोजन दें। शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था नहीं, तो उसे अध्ययन या प्रशिक्षण के लिए रियायती या मुफ्त स्थान दें। शुल्क माफ कर दें। यदि कोई परिवार बच्चों के श्रम के बिना जीविकोपार्जन करने में कठिनाई महसूस करे तो उसे आर्थिक सहायता दें जिससे वे बच्चों को

शिक्षण-प्रशिक्षण के लिए मुक्त करें। ताकि जब काम, परीक्षण, प्रतियोगिता का समय आए तो सभी स्थानों पर केवल योग्य ही लिए जाएँ। वही सकारात्मक कार्रवाई होगी। तभी हम विश्वस्तरीय बनेंगे।

आज यह कोई नहीं कहेगा कि आरक्षण की सुविधा दी गई जातियों की स्थिति १९४७ की तुलना में अब बदतर हो गई है। उस समय अनुसूचित जाति-जनजाति समुदाय के लोग बड़े पदों पर शायद ही दिखते थे, लेकिन आज जब सभी सत्ता निकायों, संसद, विधानसभाओं, सर्वोच्च पदों और राष्ट्रीय, राजकीय संस्थानों में उनकी उपस्थिति नियमित बन चुकी है तब भी विशेष अधिकारों का जारी रहना सब के लिए हानिकारक सिद्ध हो रहा है। ऐसी स्थिति में और भी नए-नए आरक्षण घातक ही सिद्ध होंगे। हमारे सभी नेताओं को पुराने आरक्षणों को भी अंतिम समय सीमा में बाँधने पर विचार करना चाहिए। देश की तमाम प्रतिभाओं को सामने लाने का उपाय सोचना चाहिए, न कि उन्हें कुंठित करते रहना। उन्हें ध्यान देना चाहिए कि भारत के युवा चाहे वे किसी भी जाति-समुदाय से हों, बाहर देशों में जाकर तरह-तरह की सफलता प्राप्त करते हैं। अमेरिका, यूरोप या अरब देशों में उन्हें कोई आरक्षण नहीं मिला, फिर भी वे अपनी जगह बना लेते हैं। तब यहीं भारत में ही उन्हें तरह-तरह से वंचित, प्रतिबंधित करना अंततः देश की हानि है। इससे कुल मिलाकर सब को हानि होती है।

– शंकर शरण

(लेखक राजनीति शास्त्र के प्रोफेसर एवं स्तंभकार हैं)

स्वभाषा का महत्व

स्वतंत्रता सैनानियों ने अपना बलिदान इसलिए दिया था कि उनका देश अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त होकर आत्मनिर्भर और स्वावलम्बी बने। उसके लिए उनका मानना था कि भारतीय भाषाएँ हर क्षेत्र में प्रतिष्ठापित हों और हिन्दी भारत की सम्पर्क राष्ट्रभाषा बने। क्या उनका सपना पूरा हुआ या आज भी हम मानसिक गुलामी से पीड़ित हैं जो राजनैतिक गुलामी से कहीं अधिक हानिकारक है। इसका कारण अंग्रेजी का बढ़ता वर्चस्व है जिसकी ताकत अंग्रेजों के शासन की ताकत से कहीं अधिक शक्तिशाली है और अंग्रेजी माध्यम की स्कूली शिक्षा से यह ताकत घर-घर में बढ़ती जा रही है। स्वतंत्रता के बाद स्वार्थवश अंग्रेजों के पक्षधरों द्वारा अंग्रेजी के प्रयोग की दी गई छूट के कारण आज यह स्थिति पैदा हुई है और उनकी कथनी और करनी में अन्तर के कारण स्थिति दिन प्रतिदिन बिगड़ती जा रही है। दिखाने के लिए भारतीय सत्ताधारी राजनेताओं ने भारतीय भाषाओं को राजभाषा का दर्जा तो दे दिया है और हिन्दी दिवस पर वे एवं सत्ताधारी बुद्धिजीवी हिन्दी के गुणगान करते नहीं थकते और उसके प्रचार के लिए करोड़ों रुपयों का अनुदान देते हैं पर स्वयं उसका प्रयोग नहीं करते। इसी कारण हिन्दी ही नहीं अन्य भाषाएँ भी अंग्रेजी के आगे बौनी पड़ गई है। परिणामस्वरूप आज आधी सदी के बाद भी राष्ट्र गूँगा है और उसकी कोई पहचान नहीं है। कोई भी भाषा राष्ट्र की सम्पर्क भाषा घोषित नहीं हुई है। हिन्दी जब अपने ही प्रदेश में प्रतिष्ठापित नहीं हुई है तो उसे राष्ट्र की सम्पर्क राष्ट्रभाषा बनाने का सपना भी पूरा नहीं हो सकता। प्रश्न उठता है कि अंग्रेजी के वर्चस्व से कौन पीड़ित या व्यथित है व्यक्ति या राष्ट्र या कोई नहीं; यदि नहीं तो चिन्तन व्यर्थ है। इसलिए अब समय आ गया है कि भारतीय भाषाओं के प्रतिष्ठापनार्थ विभिन्न पहलुओं पर विचार करें और यदि भारतीय भाषाओं का प्रतिष्ठापन राष्ट्रहित में है तो उसके लिए दृढ़ता से संगठित होकर प्रयास किया जाए।

भावनात्मक- इसमें विचारणीय है स्वभाषा का मान सम्मान। हमें स्वभाषा के सम्मान के लिए कार्य करना चाहिए और अपमान से बचाना चाहिए। कोई भाषा सम्मानित तब होती है जब वह ज्ञान-विज्ञान की वाहक हो और अपमानित तब होती है जब उसका प्रयोग उस प्रयोजन के लिए नहीं किया जाए जिसके लिए उसको निर्धारित किया गया है। अंग्रेजों के शासनकाल में हमारी भाषाएँ न सम्मानित थीं और न ही अपमानित होती थीं पर अब अपमानित भी हो रही हैं। आज हमारी भारतीय भाषाएँ राज्यभाषाएँ एवं राजभाषा बनी हुई हैं पर हकीकत में उनको यह दर्जा प्राप्त नहीं है, अतः वे अपमानित हो रही हैं। सबसे अधिक अपमानित हिन्दी है। इसका कारण स्वभाषा के स्वाभिमान का विलुप्त हो जाना है। अतः स्वभाषा को सम्मान दिलाने या उन्हें अपमान से बचाने के लिए स्वभाषा के प्रति खोऐ स्वाभिमान को जगाना होगा।

सांस्कृतिक- विचारणीय है कि संस्कृति क्या है और स्वभाषा व संस्कृति का क्या सम्बन्ध है? क्या यह अध्यात्मवाद एवं अपनापन है या हमारे ग्रन्थ रामायण, गीता या पूजा पाठ? एक प्रतिष्ठित पत्रकार डॉ. झुनझुनवाले का कहना है कि अपने ग्रन्थों का अंग्रेजीकरण कर दिया जाए तो हमारी संस्कृति बरकरार रहेगी।

हाल में कल्याण के एक प्रकाशक ने हनुमान चालीसा को रोमन में निकालने का निर्णय लिया है। अंग्रेजी के किस स्तर

Narad Sarad Sahit Ahisa;
Jam Kuber Digpaal Jahan Te,
Kabi Kobid Kahi Saki Kahante;
Tum Upkaar Sugreevhin Kinha,
Raam Milaaye Raajpad Dinha;
Tumhro Mantra Bibhishan Maana,
Lankeswar Bhaye Sab Jag Jana;
Joog Sahastra Jojan Par Bhaanu,
Lilyo Taahi Madhur Fal Jaanu;
Prabhu Mudrika Meli Mukh Maahi,
Jaldhi Laanghi Gaye Achraj Naahi;

के प्रयोग से संस्कृति नष्ट हो रही है? अंग्रेजों के शासनकाल में जब अंग्रेजी राजभाषा थी तब संस्कृति को इतना खतरा नहीं था? हमारी भारतीय भाषाओं की मूलप्रवृत्ति अध्यात्मवाद एवं अपनापन है जब कि अंग्रेजी की मूल भावना भौतिकवाद एवं औपचारिकता है। अंग्रेजों के समय में हमारी स्कूली शिक्षा स्वभाषा के माध्यम से होती थी और निजी व्यवहार, जैसे विवाह इत्यादि के निमंत्रण पत्र में स्वभाषा का प्रयोग होता था, पर आज अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में दिन प्रतिदिन बढ़ोत्तरी हो रही है और निजी व्यवहार में भी उसका प्रयोग बढ़ रहा है। निजी व्यवहार को रोकने के लिए अंग्रेजी का प्रयोग करने वाले के साथ असहयोग करना होगा। जैसे अंग्रेजी में आए निमंत्रणों को स्वीकार नहीं करना और स्वभाषा के प्रति स्वाभिमान को जगाना होगा। स्वभाषा के माध्यम से स्वदेश के प्रति चिन्तन होगा। इस सम्बन्ध में निम्न विचार उपस्थित हैं।

भ्रष्टाचार– भ्रष्टाचार का कारण है भौतिक सुख के लिए धनोपार्जन। भौतिक सुख का कारण है भौतिकवाद की विचारधारा को अपनाना। जैसे हम ऊपर कह चुके हैं कि अपनी भारतीय भाषाओं की मूल प्रवृत्ति अध्यात्मवाद एवं अपनापन है जबकि अंग्रेजी की मूल भावना भौतिकवाद एवं औपचारिकता है। अतः अंग्रेजी को जीवन के हर क्षेत्र में माध्यम के रूप में अपनाने से भौतिकवाद और भौतिकवाद से भ्रष्टाचार बढ़ा है। यदि यह कारण नहीं है तो अन्य कारण क्या है, इस पर विचार आवश्यक है।

राष्ट्र एवं जनहित– किसी भी राष्ट्र एवं उसके जनहित का अर्थ है जन-जन की खुशहाली, आर्थिक सम्पन्नता, आत्मनिर्भरता एवं स्वाभिमान से जीना। विश्व में विकसित राष्ट्रों में ऐसा पाया जाता है। विचारणीय है कि विकसित राष्ट्र बनने में स्वभाषा/जनभाषा की क्या भूमिका है? यह देखा जा सकता है कि विश्व में विकसित राष्ट्र वही है जिसकी जनभाषा, शिक्षा का माध्यम व कार्यभाषा एक हो।

वैज्ञानिक तर्क पर यह सही प्रतीत होता है। किसी भी देश का विकास मौलिक शोध एवं उस देश की धरती के संसाधनों से जुड़े प्रोद्यौगिकी विकास के लिए अनुप्रयोगिक शोध पर निर्भर करता है।

वैज्ञानिक शोध दो प्रकार के होते हैं– मौलिक जिसमें प्राकृतिक नियमों की मलभूत खोज होती है और अनुप्रयोगिक जो देश विशेष के संसाधनों, पर्यावरण, जलवायु इत्यादि पर आधारित होते हैं। अनुप्रयोगिक शोध से ही देश विशेष की आवश्यकताओं के अनुकूल प्रौद्योगिकी का विकास होता है। जहाँ मौलिक शोध से देश की आर्थिक सम्पन्नता व उसकी प्रतिभा बढ़ती है वहीं अनुप्रयोगिक शोध से आत्मनिर्भरता बढ़ती है। मौलिक शोध का ताजा उदाहरण बिल गेट्स द्वारा व्यक्तिगत कम्प्यूटर सिद्धान्त का विकास है इससे अमेरिका की सम्पन्नता बढ़ी। स्वभाषा के कम्प्यूटरों का विकास अनुप्रयोगिक शोध का उदाहरण है।

देश विशेष की आवश्यकताओं के अनुकूल प्रौद्योगिकी के विकास से ही जन-जन के लिए उपयोगी व्यवसाय विकसित हो सकते हैं। उदाहरण के लिए घरेलू उद्योग धन्धे तथा कुम्हार का मिट्टी का कुल्लड़, कृषि का विकास। कुल्लड़ का कचरा प्रदूषण पैदा नहीं करता क्योंकि टूटने पर मिट्टी मिट्टी से मिल जाती है। हमारे देश में किसान गोबर की खाद का प्रयोग करते थे जो धरती की उर्वरा शक्ति को नष्ट नहीं करती। रासायनिक खाद का उपयोग करके हम अपनी धरती की उर्वरा शक्ति को खो रहे हैं। यदि इस क्षेत्र में शोध किया जाता है तो कुम्हार के कुल्लड़ को मजबूत किया जाता। कचरा आदि से रसायनरहित खाद का प्रयोग बढ़ाया जाता तो गाँव-गाँव में व्यवसाय विकसित होते और शहर की ओर दौड़ कम होती।

इसी प्रकार परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में धरती से जुड़े शोध का उदाहरण है थोरियम आधारित परमाणु बिजलीघर विकास क्योंकि हमारे देश में थोरियम का अथाह भंडार है, यूरेनियम का नहीं। अतः थोरियम के परमाणु बिजलीघर का विकास हमें आत्मनिर्भर बनाएगा जबकि यूरेनियम के परमाणु बिजलीघरों में हम पश्चिम के विशेषकर अमरीका पर निर्भर रहेंगे। इसी परनिर्भरता के कारण शायद हम परमाणु संधि पर हस्ताक्षर करने को विवश हुए हैं। मौलिक, अनुप्रयोगिक दोनों प्रकार के शोध देश की प्रतिभाओं द्वारा होते हैं। दोनों शोध के लिए पहली आवश्यकता है मौलिक/रचनात्मक चिन्तन व लेखन एवं ज्ञान का आत्मसात करना, दूसरी आवश्यकता है भाषा पर अधिकार व तीसरी है अपने देश की आवश्यकताओं को समझना। प्रश्न उठता है कि क्या अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने वाली प्रतिभाएँ इस दिशा में कार्य कर सकेंगी?

मौलिक चिन्तन– इसमें विचारणीय है कि क्या

१. स्कूली विशेषकर प्राथमिक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा या जनभाषा से अलग भाषा होने पर मौलिक चिन्तन समाप्त हो जाता है क्योंकि उस भाषा को सीखने के लिए रटना पड़ता है और बौद्धिक विकास के प्रारम्भिक वर्ष दूसरी भाषा को सीखने में ही व्यतीत हो जाते हैं जबकि स्वभाषा या जनभाषा में सहजता से ज्ञान अर्जित करने के कारण मानसिक विकास होता है, दूसरे विचारों की उड़ान सपनों में होती है और सपने स्वभाषा में ही देखे जाते हैं। मौलिक चिन्तन के विकास के लिए सपनों की भाषा एवं शिक्षण भाषा का एक होना आवश्यक है।

२. ज्ञान का आत्मसात स्वभाषा/जनभाषा से ही संभव है क्योंकि वह जन्म से हमारी रग-रग में बस जाती है।

३. दूसरे की भाषा से हम ज्ञान प्राप्त तो कर सकते हैं पर ज्ञान का सृजन नहीं कर सकते।

४. मौलिक लेखन के लिए विचारों को लिपिबद्ध करने के लिए आवश्यक इच्छा तब ही होगी जब मौलिक लेखन स्वभाषा या जनभाषा में हो।

भाषा पर अधिकार- व्यक्ति चाहे जितना भी चिन्तन कर ले यदि उसका भाषा पर अधिकार नहीं है तो न तो वह सत्साहित्य को ग्राह्य कर सकता है और न स्वयं को अभिव्यक्त कर सकता है। अपने शोध को समझाने के लिए भाषा पर अधिकार की आवश्यकता होती है। विचारणीय है कि क्या शिक्षा का माध्यम और बोलचाल की भाषा अलग होने से अभिव्यक्ति प्रभावी होगी या हम आधे अधूरे रहेंगे।

सत्य तो यह है कि न तो हम उन लोगों में प्रभावी होंगे जिनकी मातृभाषा हमारी स्कूली शिक्षा का माध्यम है और नहीं अपने लोगों में।

देश की आवश्यकताओं को समझना- अनुप्रयोगिक शोध के लिए आवश्यक है कि उस देश की मूलभूत आवश्यकताओं को समझना, उसके संसाधनों, उसकी जलवायु एवं उसके परिवेश से परिचित होना। भारत का परिवेश गाँवों से है अतः गाँवों से जुड़ना आवश्यक है। विचारणीय है कि अंग्रेजी माध्यम में पढ़ने वाले लोग हमारे गाँवों की स्थिति दर्शाने वाले समाचार पत्रों एवं स्वभाषा में लिखे साहित्य को न पढ़ने के कारण हमारे गाँवों के परिवेश से न जुड़कर विदेशी परिवेश से जुड़ रहे हैं।

- डॉ. विजय कुमार भार्गव
सेवानिवृत्त वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी
परमाणु ऊर्जा विभाग, मुम्बई

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास
भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री
डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित
सत्यार्थप्रकाश
अवश्य खरीदें।
घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१
अब मात्र कीमत ₹ 45 में
४००० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

समाचार

जयपुर में दिनांक १ एवं २ मार्च को म.द. सरस्वती जन्मदिन समारोह

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का १९६वाँ जन्मदिन समारोह आर्य समाज, कृष्ण पोल बाजार, जयपुर में दिनांक १ मार्च एवं २ मार्च २०१६ को प्रातःकाल ९ से १२ बजे तक मनाया गया। समारोह में विशिष्ट अतिथि माननीय न्यायाधिपति एस.एस.कोठारी जी थे। प्रमुख अतिथि सत्यव्रत जी सामवेदी, रमिला खडिया; विधायक, प्रो.आर.एस. कोठारी थे। अन्य गणमान्य जनों में डॉक्टर मुरारी लाल जी पारीक, केशव जी शर्मा, कुसुम बाला जी, सुमित्रा जी आर्य, सत्यार्थ दूत सरोज जी वर्मा, अरुणा जी देवड़ा की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। महिला आर्य समाज किशनपोल, महिला आर्य समाज; राजापार्क, आर्य समाज मोती कटला; मानसरोवर, महिला आर्य समाज मानसरोवर, वैशाली नगर, नींदड, जनता कालोनी, बगरू, आर्य समाज दक्षिण, दिव्य वैदिक संत्सग के आर्यजनों का सान्निध्य प्राप्त हुआ। समारोह में वैदिक संस्कृति के कार्य में समर्पित आर्यजनों का सम्मान किया गया।

– कमलेश शर्मा, मंत्री, आर्य समाज कृष्णपोल, जयपुर

असम के बोकाजान में दयानन्द आर्य विद्या निकेतन तैयार

असम के बोकाजान में अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ, नई दिल्ली द्वारा दानी महानुभावों के सहयोग से दयानन्द आर्य विद्या निकेतन का नया भवन बन कर तैयार। अभी तक २०० बच्चों ने प्रवेश ले लिया है। अप्रैल से नया सत्र आरम्भ होगा।

– जोगेन्द्र खट्टर, दयानन्द सेवाश्रम संघ

अलवर में आर्य विद्यालयों एवं आर्य समाज की बैठक

आर्य कन्या विद्यालय समिति, श्री राम जी लाल आर्य कन्या छात्रावास समिति एवं समस्त जिले की आर्य समाजों की आवश्यक बैठक दिनांक ९ फरवरी २०१६ को प्रातः ११ बजे छात्रावास समिति कार्यालय स्वामी दयानन्द मार्ग अलवर में १ मार्च २०१६ को स्वामी दयानन्द जयन्ती के उपलक्ष में ५१ कुण्डीय यज्ञ आयोजित करने की व्यवस्था पर विचार-विमर्श हेतु रखी गई।

– प्रदीप कुमार आर्य

आर्यसमाज, रमेश नगर में उत्सव सम्पन्न

आर्य केन्द्रीय सभा करनाल के तत्त्वावधान में आर्यसमाज रमेश नगर, करनाल द्वारा दि ८ फरवरी २०१६ को प्रातः ७ बजे यज्ञ, भजन व वेदप्रवचनों के साथ वसन्तोत्सव का शुभ आरम्भ हुआ। इस अवसर पर आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी के ब्रह्मत्व व पण्डित राजीव आर्य के पौरोहित्य में बृहद् यज्ञ सम्पन्न हुआ।

आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी ने एक वेद मन्त्र का व्याख्यान करते हुए सफलता के सूत्र बताये। आर्य भजनोपदेशिका अमृता आर्या ने भजनांजलि प्रस्तुत की। समारोह की अध्यक्षता सुभाष चौधरी ने की, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान डॉ. आनन्द आर्य जी अधिष्ठित रहे। सभा का संचालन श्री अमर सिंह आर्य ने किया।

– राजीव आर्य पुरोहित, आर्य समाज, दयालपुरा, करनाल

ग्रन्थ विमोचन

आचार्य आनन्द प्रकाश द्वारा सम्पादित एवं व्याकरणादि की टिप्पणियों से संस्कृत षड् दर्शन-निर्वचन कोश तथा चतुर्वेद निर्वचन कोश का वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ में पूज्य स्वामी सत्यपति जी द्वारा दिनांक ८ फरवरी २०१६ को विमोचन किया गया। इस अवसर पर आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद के अधिष्ठाता स्वामी ऋतस्पति जी एवं आचार्य आनन्द प्रकाश जी उपस्थित थे।

गणतंत्र दिवस समारोह मनाया गया

आर्यसमाज, हिरणमगरी द्वारा संचालित दयानन्द कन्या विद्यालय में गणतंत्र दिवस समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ध्वजारोहण मुख्य अतिथि श्रीमती सुशीला जी बंसल द्वारा किया गया। विद्यालय की बालिकाओं ने राष्ट्रगान, गायत्री मंत्र, ईश्वर स्तुतिप्रार्थनोपासना मंत्र, स्वागत गीत, व्यायाम प्रदर्शन, सूर्य नमस्कार, हिन्दी एवं अंग्रेजी में गणतंत्र दिवस के उपलक्ष में भाषण, आर्य समाज के दस नियम, समूह नृत्य, राजस्थानी नृत्य आदि आकर्षक प्रस्तुतियाँ देकर सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में प्रो. डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने अतिथियों का स्वागत किया, मानक निर्देशिका श्रीमती पुष्पा जी सिन्धी ने विद्यालय का परिचय दिया तथा श्री कृष्ण कुमार सोनी ने धन्यवाद प्रस्तुत किया। इस अवसर पर श्रीमान् के.पी. सिंह जी, प्रो. वी.के. राजवंशी ने सभा को सम्बोधित किया। श्री सत्यनारायण जी आसट, श्री रामनिवास जी गदिया, डॉ. आशा खमेसरा, श्रीमती गायत्री सोनी, श्रीमती शारदा जी गुप्ता ने बालिका तथा अध्यापिकाओं को प्रेरणा प्रदान की। श्री भूपेन्द्र जी शर्मा ने अपने पिता श्री जितेन्द्र पाल स्मृति खेलकूद प्रतियोगिता में विजयी छात्राओं को पुरस्कृत किया। बालिकाओं द्वारा निर्मित वस्तुओं की विक्रयार्थ प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिन्हें अतिथियों ने क्रय कर छात्राओं को प्रोत्साहित किया। श्री भूपेन्द्र शर्मा द्वारा समारोह का सुरुचिपूर्ण सफल संचालन किया गया।

– कृष्ण कुमार सोनी, मंत्री, दयानन्द कन्या विद्यालय, उदयपुर

क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर मार्च २०१९

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ में दिनांक २४ से ३१ मार्च २०१६ तक क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जा रहा है। इच्छुकजन दूरभाष ०२७७०-२८७४१७ अथवा ९४२७०५९५५० पर सम्पर्क करें। अधिक जानकारी हेतु आश्रम की वेबसाइट **www.vaanaprastharojad.org** का अवलोकन करें।

सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता सम्पन्न

आर्यवीर दल, उत्तरप्रदेश द्वारा आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् तपोनिष्ठ गुरुकुल, कालबा के संस्थापक आचार्य बलदेव जी की स्मृति में द्वितीय अखिल भारतीय सत्यार्थप्रकाश प्रतियोगिता का आयोजन १० जनवरी २०१६ को किया गया। प्रतियोगिता को सहपुस्तक परीक्षा के रूप में आयोजित किया गया ताकि प्रतिभागीगण सत्यार्थप्रकाश का ध्यानपूर्वक अध्ययन कर सकें। यह परीक्षा देशभर के १०८ जनपदों में १८२ केन्द्रों पर सम्पन्न हुई।

वधू चाहिए

संस्कारित आर्य परिवार के युवक हेतु (जन्म तिथि 12.1.92, कद 5 फुट 5 इंच, शिक्षा बीटेक (कम्प्यूटर साइंस) एनआईटी रायपुर लिमिटेड कम्पनी में अच्छी पोस्ट पर कार्यरत) आर्य परिवार की शिक्षित सुसंस्कारित युवती चाहिए। सम्पर्क-9412865775

ये कैसा मजाक

२१ फरवरी को विश्वभर में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया गया। भारत में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने भी सभी शिक्षण संस्थानों को इस दिवस को मनाने और इस उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित करने का आदेश दिया। इस आदेश में एक ओर मातृभाषा हिन्दी का उल्लेख तक नहीं है वहीं सबसे बड़ा मजाक यह है कि यह पूरा आदेश अंग्रेजी में है। इसे शर्मनाक न कहा जाय तो क्या कहा जाय?

अबू धाबी का ऐतिहासिक फैसला, हिन्दी को बनाया अदालतों में तीसरी आधिकारिक भाषा

अबू धाबी ने ऐतिहासिक फैसला लेते हुए अरबी और अंग्रेजी के बाद हिन्दी को अपनी अदालतों में तीसरी आधिकारिक भाषा के रूप में शामिल कर लिया है। न्याय तक पहुँच बढ़ाने के लिहाज से यह कदम उठाया गया है। अबू धाबी न्याय विभाग (एडीजेडी) ने श्रम मामलों में अरबी और अंग्रेजी के साथ हिन्दी भाषा को शामिल करके अदालतों के समक्ष दावों के बयान के लिए भाषा के माध्यम का विस्तार कर दिया है। इसका मकसद हिन्दी भाषी लोगों को मुकदमे की प्रक्रिया, उनके अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में सीखने में मदद करना है।

आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक, संयुक्त अरब अमीरात में भारतीय लोगों की संख्या २६ लाख है जो देश की कुल आबादी का ३० फीसदी है और यह देश का सबसे बड़ा प्रवासी समुदाय है।

यहाँ यह भी उल्लेख कर देना समीचीन होगा कि भारत के हिन्दी भाषी प्रदेशों के उच्च न्यायालयों में भी अभी न्यायिक निर्णय हिन्दी में नहीं दिए जाते। गत दिनों माननीय उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश महोदय ने न्यायिक निर्णय हिन्दी में दिए जाने के महत्त्व को समझते हुए शीघ्र ही न्यायिक निर्णयों का सार संक्षेप हिन्दी में देने के निर्देश दिए हैं जिसकी प्रतीक्षा रहेगी।

'अल्पसंख्यक' शब्द को पुनः परिभाषित करने का आदेश

सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग को निर्देश दिया कि वह किसी समुदाय के राष्ट्रीय औसत के बजाय राज्य में उसकी आबादी के आधार पर 'अल्पसंख्यक' शब्द परिभाषित करने के लिये दिशा-निर्देश बनाने की माँग वाली याचिका पर तीन महीने के अन्दर फैसला करे। चीफ जस्टिस रंजन गोगोई और न्यायमूर्ति संजीव खन्ना की पीठ ने बीजेपी नेता और वकील अश्विनी उपाध्याय से कहा कि वह आयोग में फिर से अपना प्रतिवेदन दाखिल करें और आयोग सोमवार से तीन महीने के भीतर इस पर निर्णय लेगा।

कोर्ट ने पूछा, 'जिन राज्यों में संख्या के लिहाज से हिन्दू कम हैं, क्या उन्हें अल्पसंख्यकों को मिलनेवाले सरकारी फायदे दिए जा सकते हैं? क्या राज्य में विशेष आधार पर अल्पसंख्यक का दर्जा केन्द्रीय स्तर से अलग तय किया जा सकता है।'

पीठ ने कहा, 'वर्तमान रिट याचिका को विचारार्थ स्वीकार करने के बजाय, हमारा मानना है कि इस समय राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग से याचिकाकर्त्ता के १७ नवम्बर २०१७ के प्रतिवेदन पर विचार करने और उचित आदेश पारित करने के लिए कहा जाना चाहिए।'

उपाध्याय ने अपनी याचिका में कहा है कि 'अल्पसंख्यक' शब्द को नये सिरे से परिभाषित करने और देश में समुदाय की आबादी के आंकड़े की जगह राज्य में एक समुदाय की आबादी के संदर्भ में इस पर फिर से विचार करने की आवश्यकता है।' याचिका में कहा गया था कि २०११ की जनगणना के अनुसार लक्षद्वीप, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, जम्मू कश्मीर, अरूणाचल प्रदेश, मणिपुर और पंजाब में हिन्दू समुदाय अल्पसंख्यक है।

बसन्त पंचमी के अवसर पर वासन्ती कवि सम्मेलन

आर्य समाज, हिरण मगरी द्वारा बसन्त पंचमी के अवसर पर वासन्ती कवि सम्मेलन आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ ने बसन्त पंचमी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए निराला जयन्ती व साहित्यकारों के देश की आजादी में योगदान से अवगत कराया। उन्होंने ग्रामीण नैसर्गिक सौन्दर्य के मानवी रूपक पर प्रकृति का जीवन्त काव्य पाठ किया। पीयू पंछी ने नारी सशक्तिकरण पर ओजस्वी रचना सुनाई। डॉ. अनन्त प्रकाश गुप्ता, रामदयाल मेहरा, जयदेव व भूपेन्द्र शर्मा ने ईश्वरीय गुणों, हवन की महिमा व सदाचारी जीवन के महत्व पर प्रेरक रचनाओं से माहौल को बसन्तमय बनाया। मंच संचालन भूपेन्द्र शर्मा ने किया। सम्मेलन की अध्यक्षता श्रीमती शारदा गुप्ता ने व आभार श्री संजय शाण्डिल्य ने ज्ञापित किया।

– भूपेन्द्र शर्मा, उपमंत्री, आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- २०१८ के पुरस्कार घोषित

निम्न प्रतिभागियों को विजेता घोषित किया गया-

प्रथम- श्रीमती सरोज आर्या; जयपुर (राज.) (पुरस्कार राशि-5100 तथा 'सत्यार्थ भूषण' उपाधि एवं प्रमाण पत्र)

द्वितीय- श्री यज्ञसेन चौहान; विजयनगर, अजमेर (राज.) (पुरस्कार राशि 1100 तथा प्रमाण पत्र)

तृतीय- श्रीमती उषा देवी पत्नी श्री धर्म प्रकाश; बीकानेर (राज.) (पुरस्कार राशि 700 तथा प्रमाण पत्र)

चतुर्थ- श्री रमेश चन्द्र प्रियदर्शन; बैरगनिया, सीतामढी (बिहार) (पुरस्कार राशि 500 तथा प्रमाण पत्र)

सत्यार्थ प्रकाश पहेली – ०१/१९ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली– ०१/१९ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं– श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), डॉ. राजबाला कादियान; करनाल (हरियाणा), परमजीत कौर; नारायण विहार (दिल्ली), श्री रमेश चन्द्र प्रियदर्शन; सीतामढ़ी (बिहार), श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्री श्रृयांशु गुप्ता; मनियाँ (राज.), श्री पं. मूलचद वशिष्ठ; नूह (हरियाणा), श्रीमती किरण आर्या; कोटा (राज.), श्री विनोद प्रकाश गुप्त; दिल्ली, श्रीमती निर्मल गुप्ता; फरीदाबाद (हरियाणा), श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री गोरवर्धन लाल झंवर सिहोर (म.प्र.), श्री इन्द्रजीत देव; यमुना नगर (हरियाणा), श्री हर्ष वर्द्धन; नेमदारगंज (बिहार), श्री श्याम मोहन गुप्ता; विजय नगर (इन्दौर), श्री देवेन्द्र कुमार (डॉ.); भीलवाड़ा (राज.), श्री अनन्त लाल उज्जैनिया; टी.टी. नगर (भोपाल), श्री राज नारायण चौधरी; शाजापुर (म.प्र.), श्री सोमपाल सिंह यादव; रामपुर (उ.प्र.), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), प्रधान जी; आर्यसमाज बीकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री यज्ञसेन चौहान; विजय नगर (राज.), श्री जीवनलाल आर्य; दिल्ली, श्रीमती सुनिता सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती रूपा देवी; बीकानेर (राज.), श्री वासुभाई मगनलाल ठक्कर; बनासकांठा (गुजरात), मीना वासुदेव भाई ठक्कर; बनासकांठा (गुजरात), धर्मिष्ठा वासुदेव भाई ठक्कर; साबरकांठा (गुजरात), श्री आचार्य उमाशंकर शास्त्री; बेगूसराय (बिहार), श्री गणेश दत्त गोयल; बुलन्दशहर (उ.प्र.), ज्योति कुमारी; डेरोली अहीर (हरियाणा), ब्र. विशाल आर्य; माउण्ट आबू (राज.)। सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य– पहेली के नियम पृष्ठ २० पर अवश्य पढ़ें।

स्वास्थ्य

ऊँटनी का दूध

प्रमुख डेयरी कम्पनी अमूल ने पहली बार गुजरात के बाजारों- गाँधीनगर, अहमदाबाद और कच्छ में ऊँटनी के दूध को बाजार में उतारा है। इस प्रमुख डेयरी कम्पनी ने कहा कि इस दूध को कच्छ क्षेत्र से प्राप्त किया गया है। ऊँट का दूध ५० रुपये की कीमत पर ५०० मिलीलीटर की पीईटी बोतलों में उपलब्ध होगा, और इसे ठंडा रखने की आवश्यकता है क्योंकि यह दूध तीन दिन तक ही उपभोग करने लायक रह पाता है।

अमूल ने इससे पहले ऊँटनी के दूध की चॉकलेट पेश की थी जिससे ग्राहकों की अच्छी प्रतिक्रिया मिल रही है। कम्पनी ने कहा कि ऊँटनी के दूध को पचाना आसान है। कम्पनी ने बताया इसमें इंसुलिन जैसे प्रोटीन अधिक मात्रा में हैं जिससे यह मधुमेह के व्यक्तियों के लिए फायदेमंद रहता है।

मस्तिष्क का विकास

ऊँटनी के दूध का नियमित सेवन करने वाले बच्चों का मस्तिष्क सामान्य बच्चों की तुलना में तेजी से विकसित होता है। इतना ही नहीं उसकी सोचने-समझने की क्षमता भी सामान्य से बहुत तेज होती है। ऊँटनी का दूध बच्चों को कुपोषण से बचाता है।

हड्डियों को मजबूत करे

ऊँटनी के दूध में भरपूर मात्रा में कैल्शियम पाया जाता है। इसके सेवन से हड्डियाँ मजबूत होती हैं। इसमें पाए जाने वाला लेक्टोफेरिन नामक तत्व कैंसर से भी लड़ने में मददगार होता है। इसे पीने से खून से टाक्सिन्स भी दूर होते हैं और यह लिवर को साफ करता है। पेट से जुड़ी समस्याओं में आराम पाने के लिए भी ऊँटनी के दूध का सेवन करते हैं।

सुपाच्य

ऊँटनी का दूध तुरन्त पच जाता है। इसमें दुग्ध शर्करा, प्रोटीन, कैल्शियम, कार्बोहाइड्रेट, शुगर, फाइबर, लैक्टिक अम्ल, आयरन, मैग्निशियम, विटामिन ए, विटामिन ई, विटामिन बी २, विटामिन सी, सोडियम, फास्फोरस, पोटेशियम, जिंक, कॉपर, मैग्नीज आदि तत्व पाए जाते हैं। ये तत्व शरीर को सुन्दर और निरोगी बनाते हैं।

डायबिटीज में आराम दे

ऊँटनी का दूध डायबिटीज रोगियों के लिए रामबाण है। ऊँटनी के एक लीटर दूध में ५२ यूनिट इंसुलिन पाई जाती है। जो कि अन्य पशुओं के दूध में पाई जाने वाली इंसुलिन से काफी अधिक है। इंसुलिन शरीर में प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है। इसका सेवन करने से सालों का मधुमेह महीनों में ठीक हो जाता है।

स्किन प्राब्लम को दूर करे

बीमारियों में राहत देने के अलावा ऊँटनी के दूध का सेवन स्किन में भी निखार लाता है। ऊँटनी के दूध में अल्फा हाइड्रोक्सिल अम्ल पाया जाता है। यह त्वचा को ग्लो देता है। यही कारण है कि ऊँटनी के दूध का उपयोग सौन्दर्य सम्बन्धी प्रोडक्ट तैयार करने में भी किया जाता है।

संक्रामक रोगों से बचाव

ऊँटनी के दूध में विटामिन और खनिज भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। इसमें पाया जाने वाला एंटीबाडी शरीर को संक्रामक रोग से बचाता है। यह गैस्ट्रिक कैंसर की घातक कोशिकाओं को रोकने में भी मदद करता है। यह शरीर में कोशिकाओं के निर्माण में मदद करता है जो संक्रामक रोगों के खिलाफ एंटीबाडी के रूप में काम करती हैं।

न्यास मंत्री भवानीदास जी आर्य का सम्मान

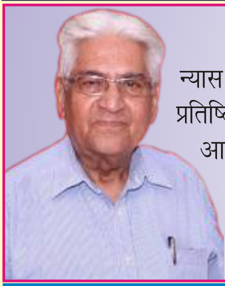

न्यास के मंत्री, आर्यसमाज पिछोली उदयपुर के वरिष्ठ सदस्य, उदयपुर नगर की अनेक सामजिक संस्थाओं के प्रतिष्ठित सहभागी, पुस्तक प्रकाशन तथा विक्रय के क्षेत्र में उदयपुर नगर की जानी मानी हस्ती श्री भवानीदास जी आर्य को, वरिष्ठ नागरिक परिषद्, उदयपुर द्वारा दिनांक ३ फरवरी २०१६ को विज्ञान-समिति सभागार, उदयपुर में आयोजित एक समारोह में सम्मानित किया गया। न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार के सभी सदस्यों एवं उदयपुर के सभी आर्यजनों की ओर से श्री आर्य को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। हम श्री आर्य के निरामय दीर्घायुष्य एवं सुखी जीवन हेतु परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

- अशोक आर्य

एकेश्वरवाद

आप सृष्टि को देखें। सर्वत्र रचना साम्य तथा एकरूप नियम कार्य करते दिखते हैं।

एकेश्वरवाद-

एकः सुपर्णः स समुद्रमा विवेश स इदं विश्वं भुवनं वि चष्टे।
तं पाकेन मनसापश्यमन्तितस्तं माता रेळिह स उ रेळिह मातरम्॥

- ऋ. १०/११४/४

वह परमात्मा एक है, वही सम्पूर्ण संसार में व्यापक है। मैं उस ब्रह्म को परिपक्व मन अथवा आत्मा से देखता हूँ।

सूर्य सर्वत्र पूर्व में उगता है, पानी सब जगह हाइड्रोजन के दो भाग व ऑक्सीजन के एक भाग से मिलकर बनता है, पृथ्वी पर सर्वत्र तत्त्वों के अणुभार, परमाणुभार तथा अन्य गुण समान हैं। वैज्ञानिकों ने प्रकृति के जिन सिद्धान्तों को खोजा वे सर्वत्र एक समान पाये जाते हैं अन्यथा इन सिद्धान्तों को गणितीय सूत्रों यथा वेग=दूरी/समय, $e=mc^2$ आदि में निबद्ध नहीं किया जा सकता था। जन्तु जगत् सर्वत्र ऑक्सीजन ग्रहण कर कार्बन डाई ऑक्साइड छोड़ता तथा वनस्पति जगत् इस कार्बन डाई ऑक्साइड से भोजन निर्माण करता है। जाति विशेष के संदर्भ में गर्भाधान, भ्रूण विकास, जन्म, औसत आयु, भोजनादि समान है। आप मनुष्य को ही ले लें। आन्तरिक रचना तथा बाह्य रचना पर विचार करें, शरीर के अन्दर हो रही सतत् प्रक्रियाओं पर विचार करें सर्वत्र अद्भुत साम्य है। यही कारण है कि भारत में प्रशिक्षित चिकित्सक यूरोप, रूस कहीं भी जाकर सफलतापूर्वक अपना

कार्य कर पाता है। क्योंकि मनुष्य शरीर के सन्दर्भ में जो कुछ उसने भारत में पाया था हूबहू वही का वही उसे उन देशों में मिलता है। विचार करें, कई मानव समुदायों में बालक के उपस्थ के अग्रभाग को काट देने का रिवाज है, इसे खतना कहते हैं। सहस्रों वर्षों से ऐसा ही चल रहा है। पर इनके ही परिवारों में उत्पन्न होने वाले बालक आज भी अग्रभाग सहित ही पैदा होते हैं क्योंकि यही ईश्वर का नियम है। अगर उनका ईश्वर पृथक होता तो वह उनके बालकों को खतना किये हुए ही पैदा कर सकता था। अतएव कोई भी देश हो, कोई समुदाय हो सबका ईश्वर एक ही है, जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का रचयिता है। ऊपर अतीव संक्षेप में संकेत किये हैं। इस प्रकार ब्रह्माण्ड के नियमों में, कृतियों में, अद्भुत साम्य एक ही रचनाकार होने की घोषणा कर रहा है।

अगर ईश्वर अनेक हों तो बुद्धि भेद, सामर्थ्यभेद, इच्छाभेद से उसी प्रकार विभिन्नताएँ दृष्टिगोचर होंगी जैसे भिन्न-भिन्न राजाओं के राज्य में भिन्न व्यवस्थाएँ। इसके साथ ही इन ईश्वरों में श्रेष्ठता की होड़ परस्पर विरोध, राग, द्वेष भी विकसित होंगे (पुराणों में अनेक देवता स्वीकार करने से सर्वत्र देवताओं के मध्य यही हंगामा दिखाई देता है।) जो कि परमेश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव के विरुद्ध है। यह भी कि अनेकेश्वरवाद सच हो तो सृष्टि में अराजकता फैल जावे। पौराणिक जगत् में सर्वमान्य महापण्डित आद्य शंकराचार्य को यहाँ उदधृत करना अतीव उपयोगी होगा।

एकेश्वरवाद-

स एष एक वृदेक एव॥ - अथर्व. १३/४/१२

वह परमात्मा एक है, सचमुच एक ही है।

'जगत् की उत्पत्ति आदि व्यापार तो नित्य सिद्ध ईश्वर का ही है। इसमें उसी का अधिकार है। जगत् की उत्पत्ति आदि में मुक्तात्माओं का सहयोग या सान्निध्य सर्वथा अनपेक्षित है। यह भी सम्भव है कि उनके अनेक होने से रचना आदि के विषय में परस्पर विरोध खड़ा हो जाय- कोई सृष्टि को बनाए रखना चाहे और कोई प्रलय करना चाहे। - शंकराचार्य

अतएव अनेक ईश्वरों को मानना नितान्त अज्ञान है, और कुछ नहीं।

- अशोक आर्य
नवलखा महल, गुलाब बाग
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 March-2019 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2019-2021

मूढ़ों को विश्वास है कि हम पाप कर नाम स्मरण वा तीर्थ यात्रा करेंगे तो पापों की निवृत्ति हो जायगी। इसी विश्वास पर पाप करके इस लोक और परलोक का नाश करते हैं। पर किया हुआ पाप भोगना ही पड़ता है।

\- सत्यार्थ प्रकाश, पृष्ठ ३२४

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरूरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर